करनेकी यमराजहूकी शक्तिनहींहै चेतआप कहैं कि और पापिन्ह कों हिसाब छोड़ि करि केवल तुम्हारोई हिसाब यमराज चारि दिन के जगह दसदिन मों करेंगे तेह पर कहतहैं कि सब अधिकार के‍ा त्याग करि केवल मेरे हिसाब करबे मो जौ लगेंगे तावत् कोटिन्ह पापिन्ह के समूह छूटिकरि चलि हैं नाम भजेंगे तब बड़ोअसमंजस सो कहतहैं कि अपने अधिकारमो खलल देखि करि प्रभु जो आप तेहितें भूरि भलाई नाम यह मनुष्य बहुत भलो है भनि हैं नाम कहि हैं अर्थात् असंख्य पाप मेरो. जो यमराजहि हिसाब न करि-सकै तो भी आप कहोगे कि जब एक पापी के पाप को गिनती तुम ते न भई ता समस्त ब्रह्माण्ड के अधिकार को कैसे करोगे तथा सब पापिन्ह को छोड़ि करि मेरोई पाप की गिनती मो कछु दिन लगे तावत् कोटिन्ह पापी छूटिभाजें तौभी आपकहोगे कि बितरेका दण्ड किये पापिन्ह को क्यौं छांड़ेतुम अधिकार योग्य नहीं दूसरो यमराज अधिकारी होयगो यह दोऊप्रकारकरि यमराज अपने अधिकार मो खललनाम हानि देखि यह असमंजस विचार करि यमराजतें कछु नबनि आवेगी आपतें यही कहेंगे कि हे महाराज यह बहुत खरो है आपके निकट रहबे योग्य है यमराजके बचन को सुनिहंसि करि भक्त की प्रतीति आप करोगेतथा भक्तशिरोमणि मानोगेअर्थात् यमराज के बचन को सुनि अन्तरयामी जो आप से जानिजावोगे कि या पापीने यमराज को हरायौ यह हंसबे मो हेतुहै तथा जो अति अधम पतितशिरामणि जीव ताको आपजो ग्रहण करतहैा तो भक्त शिरोमणि करिदेतहैा जैसे दशरथजू को पिण्डदान नहीं किये गृद्ध जो जटायू ताको अपने हस्तकरि पिण्डदान देत भये अरु सब महर्षि को त्यागकरि सेवरी के आश्रम मो गये तथा महाराजयुधिष्ठिर के यज्ञमो समस्त ब्रह्माण्ड के महात्मा रहे अरु आप विद्यमान रहे पर यावत् स्वपचन आयौ तावत् पांचजन्य शंख न बज्यो ऐसा कृपा स्व-भावहै आपकोतेह स्वभावतेंपतित शिरोमणिको भक्तशिरोमणिकरत हैा यह भावहै पूर्वोक्त रीतिकरि हमखरे अथवा खोटे होंय परजौने तौनेप्रकारतें तुलसीदासको हेकोशलपति अपनायेही पैबनेगो अर्थात् जब तक मोको न ग्रहण करोगे तब तक नहीं यहअर्थ है ॥ ६५ ॥

मू०। जौपैजियधरिहैा अवगुणजनके। तौक्यौंकटतसुकृतनखतें मोपै बिपुलवृन्दअघवनके। कहिहै कौनकलुषमेरे कृत कर्म बचन

अवगुनके । हारहिं अमितगेषसारद श्रुति गिनत एकएकछिन के। जौचित चढ़ैनाम महिमा निज गुणगण पावन पनके। तौ- तुलसिहिं तारिहौ विप्रज्यौं दसन तोरि यमगनके ॥ ९६ ॥

टी० । चेत जो आप यह कहो कि अपने शुभकर्मते पापकोनाश करो तेहपर कहत हैं कि हे भगवन् जोपै नियमैं दासके अवगुणको धरोगे तो कैसे कटेगो। पुण्य रूप नख तेहते बहुत जो समूह पाप सोई बड़ो बनरूप सोपै नाम रूपते अर्थात् मेरो पुण्य नखतुल्य पाप बन सदृश तौ नखते बनकटै है अपने पापन्ह को अनन्तता जनाये मेरी कर्त्तव्यतातें मेरो कल्याण नहीं पर जो अपने नामकी महिमा आपके चित्तमें चढ़िनामआवे तथापावन जोगुण समूहताकोपण जो प्रतिज्ञा स्मरण होय तौतुलसीको संसारतेपार करोगे ज्यौंविप्रनाम अजामिलको नाईं यमगणके दांतको तोरिकरि ऐसीप्रतीतहै मोको ॥ ९६ ॥

मू० । जोपै हरिजनके गुणगहते। तौसुरपतिकुरु राव बवलिसोंकत हठिबैरबिसहते । जोजपयज्ञयोगव्रतवर्जित केवलप्रेमनचहते। तौकतसुरमुनिबरबिहाइब्रजगोपगेहबसिरहते । जौजहंतहै प्रणराखि भक्तकोभजन प्रभाव न कहते । तौकलिकठिनकर्म मारग जड़हमकेहि भांति निबहते । जौ सुतहित लियनाम अजामिलके अघअमितनदहते । तौयमभटसासति हरहमसे- वृषभखोजि खोजि नहते। जौ जगबिदित पतित पावन अति व्याकुल बिरद न बहते । तौबहुकल्प कुटिल तुलसीसे सपनेहु सुगतिनलहते ॥ ९७ ॥

टी० । अवयह कहतहैं कि भगवानभक्तके अवगुणको ग्रहण नहीं करते काहे कि जो दासन्ह के दोष को देखते तो सुरपति जो इन्द्र कुरुराज जो दुर्योधन तथा बालो सों कतनाम काहे को हठकरि के बैरको बेसहते नाम मोललेते अर्थात् और के बैरते आप बैरी होते याको यह अर्थ है कि इन्द्रके बागतें पारिजातकको एकफूल नारदजू ले आये सो रुक्मिणीजूको दिये तेहको अत्यन्तद्वेष भयो सो निषेध रूप जोद्वेषतेह अवगुणको योभगवान् जोअपने हृदय सोले आवते तो सत्यभामाके अर्थइन्द्रतेलड़िकरि पारिजातकको इन्द्रते छीनिकार कैसे देते तथा युधिष्ठिरादि पांचो भाई ताको जन्म कर्म दोऊ नि- षेधरूप पांडुकी स्त्री कुन्ती तेह विषे धर्मते युधिष्ठिर इन्द्रते अर्जुन वायुते भीमसेन तथा छोटोमाद्री तेहविषे अश्विनीकुमारते नकुल

सहदेव स्त्री औरकी ताहूपर अनेकपुरुषन्हते उत्पन्न जो पाण्डवऐसो तो अन्यतथा स्त्री एक तेहके पति पांचों भाई यह कर्म जाको तेहु तोषको भगवान देखते तौ तिनके अर्थ दुर्योधनतें काहेको वैर करते तथा सुग्रीव बालीको पर्वतके कन्दरामें बंदकरि आपताराको भोग करतभयो यह अगम्यागमन महापातक तेहिके ओर जोदृष्टिकरते तौतेहसुग्रीवके अर्थबालीको कैसेंमारते इनहेतुन्हकहि निश्चयहोतहै कि दासके दोषको नहीं देखते केवल प्रेमके आधीन भगवान् हैं यामें हेतुकहेरहते पदकाकुहै किन्तु न रहते यह अर्थहै जो जहां तहां भक्तन्हकी प्रतिज्ञा राखिकरि भजनके प्रभावको न कहते नाम विदित न करते तौ कठिनता कलिकाल तामें कहूं मार्ग जो अति दुस्तर तेहविषै हमऐसे जड़ केहप्रकारते निबहते अर्थात् कलिकाल विषें कर्मकाण्डकी सामग्रीअरु अधिकारी सबको अभावहै जो केवल भजनते कृतार्थ न करतेतो कलिकालके सब जीव नरक भागी होते यह भाव है केवल नामावलम्बकरि कृतार्थता जनावत हैं कि पुत्रके निमित्त नामको लियो जोअजामिल सोऊ एकबारताके अमितपाप कोजो न जनावतेतो यमराजके भटजोदूतसो खेत जोतनेवालेसांसति जोनरकादि को नानाक्लेश हरकूपताभें हम ऐसे हृषभन्हको खोजि२ नहते नामनाथते अर्थात् अजामिलके प्रसंगको स्मरणकरियमदूतन्ह तें छूटवेकी प्रतीतिहोतहै जौं जगतविषें विदितजो पतित पावनादि अत्यन्तगांकी बिरदावली न बहते नाम न धारण करते तौ औरन्ह तो न कहिसकैं पर तुलसीऐसे कुटिलजीव सो बहुत कल्प पर्य्यन्त साक्षातकी कौनआशा स्वप्नऊमें सुगतिन पावते॥ ९७॥

मू०। ऐसीहरिकरत दासपरप्रीती। निज प्रभुताबिसारि जनके बस होतसदायहरीती। जिनबांधेसुर असुरनागनर प्रबलकर्म की डोरी। सोइअविछिन्न ब्रह्मयशुमति बांध्यो हठिसकतन छोरी। जाकीमायाबस बिरंचिशिवनाचतपार न पायो। करतलताल बजाइग्वालयुव तिन्हसोइनाच नचायो। विश्वम्भरश्रीपतित्रिभु-वनपति बेदविदित यहलीख। बलिसोंकछुनचलीप्रभुताबरु ह्वै द्विजमांगीभीख। जाकेनामलिये छूटत भवजन्म मरनदुखभार। अंबरीखहितलागि कृपानिधिसोइ जन्मोदशबार। योगविराग ध्यानजपतपकरि जेहिखोजत मुनिज्ञानी। बानरभालुचपलपशु पांवरनाथतहांरतिमानी। लोकपालयमकालपवनरविशशिसब

आज्ञाकारी । तुलसिदासप्रभु उग्रसेनकेद्वारबेंतकरधारी ॥ ९८ ॥

टी० । केवलप्रीति के आधीन भगवान् हैं सो अनेक हेतुतें जनावतहैं इति प्रथम हेतु इति द्वितीयहेतु विश्वंभर नाम विश्वके भरनेवालेकी-खनामलिपि बहनाम बयुयह लोगे। किहै अर्थात् प्रभुता आचले बह ब्राह्मण होकरि भीखमांगतभये यह अन्वयहै इतितृतीयहेतु अत्यन्त प्रीतिकी परवसता देखावतहैं जाके नामतें संसार छूटेताको जन्म हो। नो अतिअसंभव है सो अंबरीखके अर्थ कृपाके निधि जो भगवान् सो दशबार जन्मग्रहण करत भये अर्थात् जैसे दुर्वासा के हेतुकरि भग-वानको आविर्भावभयो तैसे केवल अंबरीष के अर्थ दशबार भगवान् आविर्भूतभये यहां अंबरीष पद उपलक्षण है ताको यह अर्थ है कि जहांबहुत कहबेको अभिप्राय है तहां एकको नाम लैदियो सबको बोधभयो जैसे भगवान् कृष्णचन्द्र उद्धवजूतें कहे कि तुम्हारे निमित्त मेरो अवतार है तौ क्या केवल उद्धवजू के अर्थ भगवान् को अवतार भयो सो नहीं किन्तु तुम्हारे वास्ते यह कहनो भगवानको सबभक्तन्ह के वास्ते अवतार मेरो है यह बोधकरतहै तैसेइहां अंबरीष सदृश जो सब भगवत् भक्तताकों ग्रहण है अर्थात् भक्तन्ह के अर्थ दशाव-तारकरि दशबार आविर्भाव भये हैं इति चतुर्थ हेतु इति पंचमहेतु इतिषष्ठ हेतु याको यह भाव भयो कि अन्यज्ञानादि साधन तेहकर भगवान संसार निवृत्तिकरि मोक्षादि सुखदेत हैं पर आधीन तौ केवल प्रेम भक्तितें होत हैं अन्य साधनतें नहींयह भाव है ॥ ९८ ॥

मू० । बिरदगरीबनेवाजरामको । गावतवेदपुराणशम्भुशुक प्रकट प्रभावनामको । ध्रुव प्रह्लादबिभीषण कपिपति जड़ पतंगपा-ण्डव सुदामको । लोकसुयश परलोकसुगति इन्हमेंको है राम-कामको । गणिकाकोलकिरात आदिकवि इन्हतें अधिकवाम को । बाजिमेधकबकियोअजामिलगजगायेकबसामको । छली मलीन हीनसबही अंगतुलसीसो छीनछामको । नामनरेशप्र-ताप प्रबलजगयुगयुगचलतचामको ॥ ९९ ॥

टी० । श्री रघुबर के बाना को जनावत हैं कि रामजू को बाना गरीबनिवाजहै ताको वेदादि गावत हैं प्रकटकरि नामके प्रभावको अर्थात् भगवानको विरद गरीबनिवाज ऐसो वेदादि कहतहैं काहू तालेवरनेवाज कह्योतेब गरीबनेवाजी को जनावतहैं तहांध्रुवजूकी अवस्थापांचवर्ष की तेहअवस्थामे पिताने त्यागकियो तथा प्रह्लादज

कोभी अवस्था वैसोईतेहसमयमो हिरण्यकशिपु ऐसोप्रबलपिता प्राणको लेनेवाला जाको कोऊ शरणनहीं तथा विभीषण सुग्रीव की एकगतिहै कि रावणबली ऐसोप्रबलशत्रु तहांअपनेको सहाय दोऊ नहीं जड़ जो यमलार्जुन जाकों एकबार प्रणामऊं करबेकों शक्तिनहीं पतङ्ग जो जटायू मांसाहारी सर्बसाधन हीन पाण्डव जो युधिष्ठिरादि पांचोभाई जेहकीगरीबी महाभारत देखतें बुझिपरतहै सुदामा प्रसिद्धहैं कि भगवानको भेंटएकमूठीचूड़ाजाको यहहेतुन्ह करि ध्रुवादिकों गरीब कहे तेह सबकों भगवत्सम्बन्ध करि लोकमो सुयशपरलोक विषैं सुगति भई इन्हसबन्हके मध्यमें रामजूकेकामको कोहै अर्थात् इन्हसब वितरेक कौनकाम रघुबर को बिगरतरह्यौकेवलगरीबीमो अपनेविषैंसनमुखता देखिअपनो करि कृतार्थकिये यहभावहै पूर्बकेवल गरीबंनको जनाये अवगरीबन्हमो जो अधमजाको दिखावतहैं गणिका जो कुकर्मकरि जीवने वाली को किरात चित्रकूटके बासी हिंसा करि जीविका जाको आदिकबि जो बाल्मीक बटपारी करतरहे इन्हसबतें अधिकबाम नामटेढ़ा दूसरोकोहै तथाअजामिल कब बाजिमेधकियो अरुगजेन्द्र सामबेदको कबगाये अर्थात् ऐसेऊ अधमन्हकों केवलशरण भयेतें कृतार्थकिये अब प्रत्यक्षप्रमाण देत हैं खलीनाम कुटिल मलीन नाम पापरूप सबहीनअङ्गनाम सबसाधनतेंहीन तुलसीऐसे छीन छामनाम दुर्बलोंते दुर्बल इहां परमार्थके साधनतें रहित होना यहीदुर्बलताहै ऐसऊ जो तुलसीताकों श्रीरामजू के नेवाजिबेको प्रतीतभई तेहतें ऐसो निश्चयभयो कि नामरूपराजा प्रतापहै प्रबल जाकों जगतविषैं ताको युग२ मो चलतहै चामकोनाम चामकी चकती यहलोकोक्तिहै अर्थात् कोऊ राजा दोघड़ी चामकीचकती चलाये नामरूप राजाको युग२ मो चलेहै इहां सर्बसाधनहीन कर्मकरि अतिअधम जो ऐसेगरीब जीव तेहसबको कृतार्थकरनो यही चामके चकतीको चलावनो है ९९ ॥

मू० । सुनिसीतापतिशीलसुभाउ। मोदनमनतनपुलकनयनजलसो
नरमेहरषाउ । शिशुपनतेंपितुमातुबंन्धुगुरुसेवकसचिव स-
खाउ। कहतरामबिधुबदनरिसौंहैंसपनेहुलख्यौनकाउ। खे-
लतसङ्गअनुजबालकनितजुगवतअटनअपाउ। जीतिहारि चु-
चुकारिदुलारतदेतदिवावतदाउ । सिखाश्रापसन्तापबिग-

तभइ परसतपावनपाउ। दई सुगति सो न हेरि हर्ष हिय चरणछुये
को पछिताउ। भवधनु भञ्जि निदरि भूपति भृगुनाथ पाइ गयताउ।
छमि अपराध छमाइ पाइ परियत इतौ न अनत समाउ। कह्यौ राज
बन दियो नारिबस गरि गलानि गैा राउ। ता कुमातु को मन युगवत
ज्यौं निज तन मर्म नघाउ। कपिसेवा बस भये कनौड़े कह्यौ पवन
सुत आउ। दीबेको न कछू रिनियां हौं धनिक तु पत्र लिखाउ।
अपनाये सुग्रीव बिभीषण तिन्ह न तज्यौ छल छाउ। भरत सभा
सनमानि सराहत होत न हृदय अघाउ। निज करुणा करतूति
भक्तपर चपत चलत चरचाउ। सुकृत प्रणाम प्रणत यश बरणत सुन
त कहत फिरि गाउ। समुझि समुझि गुणग्राम राम के उर अनुरा-
ग बढ़ाउ। तुलसिदास अनयास राम पद पाइहै प्रेम पसाउ १०० ॥

टी०। पूर्व पद विषे श्रीरघुबर को गरीबनेवाजी अधमोद्धारणादि
बिरदावली कहि करि अब जीव को उपदेश करत हैं सीतापति को शील
स्वभाव सुनि करि मन विषे आनन्द शरीर मो पुलक नेत्र विषे जल न भयो
सो मनुष्य खेह नाम धूरि खरह नाम घास खाउ अर्थात् ताके मुख मो धूरि
पड़ो तथा घास गदहा खाय है सो मनुष्य गर्दभ तुल्य है अब अनेक हेतुतें
स्वभाव को परत्व देखावत हैं पिता माता दि सब कहत हैं कि बाल्यतें रघु-
बर को मुखचंद स्वप्न में रिसोहैं न लख्यौ अर्थात् महाराज दशरथादि
जाे बाल्यतें गाेद मो खिलाये से। ऐसा उत्कण्ठा करत हैं कि रामजू को
मुख जागते साेवते सर्वदा देखत हैं वात्सल्य करुणा श्रृंगारादि रसयुक्त
सुमुख की झांकी सर्वदा होतु है पर क्रोधयुक्त मुख कबहूं स्वप्न मों न देखे
इति प्रथम हेतु बाल्य अवस्था में संग विषे खेलत जाे भाई तीनाें अरु
अयाेध्या के प्रजन्ह के बालक सब नित प्रति तेह सब को खेल विषे अनट
नाम टेंटि अपाउ नाम उलटा व्यापार ताको याेगवत नाम रुचि को
राखत अर्थात् बाल्य के स्वभाव करि प्रजन्ह के बालक स्वामी सेवक
को भाव उल्लंघि करि खेल मो चेष्टा करें ताको छमा करि ज्याें त्याें जाे
अपना दाव ताको हारि देनाें तथा पिता माता वत् चुचुकारि करि
दुलारनो दाव जीबा जी सो आप जदेनो अरु भाइन्हतें दिवावनो
अर्थात् बाल्य अवस्था मो खेल अति प्रिय है भाइन्ह ते भाई को कलह होत
है तेह अवस्था मो ऐसा स्वभाव श्रीरघुबर को छाेड़ि और के याेग्य नहीं है
इति द्वितीय हेतु शिला जाे अहिल्या साे गाैतम के श्राप तें अरु संताप
नाम पाप युत क्षाेभ तेह तें विगत नाम विशेष करि रहित भई पवित्र

चरण स्पर्शतें सोऐसे दुखतेंछोड़ाय सुगति देतभये सोदेखकरिहर्ष हृदयमेंानभयोउलटेचरणतें छुयेको।पश्चात्ताप कियेअर्थात् ब्राह्मणी को हमचरणतेंछुये यहबड़ो अधर्मकिये ऐसो।दुख मानतभयेइति तृतीयहेतु सबराजन्हको।निरादरकरि शिवजूकेधन्वा।कोभञ्जनकिये अर्थात् जोकोऊ राजन्हतें नभयो सो।बलकिये तथा।परशुरामजू ताकेप्रतापतें ताऊनाम तापपावतभये ऐसऊ पराक्रमकरि अपने विषें सर्वसामर्थ्यकेरहते परशुरामजूके। दुर्वचनरूप जोनानाअपराधसो क्षमाकरि उलटो पावनपर गिरिलक्ष्मणजूके कठोरवचन को अपराधमानि क्षमाकरावतभये इतोनामऐसोकार्तव्यताअनत नहींसमाउ नामअटतहै अर्थात् मनुष्यन्हको कहेअन्य जो भगवत् औतारादि तथासाक्षात विष्णुमोभी यहस्वभावनहींमिलैहै इति चतुर्थ हेतु पितानेराज्यदेवेको कह्यौ। उलटो बनदियो स्त्रीके बस पश्चात् ग्लानिकरि गरिगयेनाम मरणभये अर्थात् पतिघातिनी अपनेको मरणात्क्लेशदेनेवाली ऐसीकुत्सितमाताकैकेईताकेमान को जोगवतरहे जैसे अपनेशरीरमें। मरमस्थानविषय कुघाउनाम पक्योफोड़ा अर्थात् कुघाउके रक्षामें अहर्निशि चितरहैहै तैसे निरन्तर चित्तदियेरहे जो।ऐसो नहोयकि कैकेईकेमनमें।खेदहोय इतिपञ्चम हेतुमहावीरकेसेवाबस कनौड़ेभयेअर्थात् प्रतिउपकार नहींकरि सकेतबकह्यौ।किहेपवनसुत आउनामइहांआओ।निकट बोलायकरि कहेकि तुम्हारेदेवेको मेरेपास कछूनहीं यह हेतुतें हमंतुम्हारे ऋणीहैं सोऋणछोड़ावनो उचितहै तुमधनिकहो पत्र नामशुनाम खतलिखाय लेव अर्थात् हम तुम्हारे सर्वकाल विषय गुलामभये यहवितरेक दूसरोप्रतिउपकारहै नहीं सोयह कृतज्ञता केवल श्रीरघुवरमें अहै इतिषष्ठहेतुसुग्रीव विभीषणको अपनेकिये तेऊदोऊ छलकी छांउनामछाया न छोड़े अर्थात् रामजूकेशरण भयेहूंअगम्यागमन रूप महापातक करतरहे ऐसेऊवेदबाह्य कर्म कर्ताको भरतजूको सभा समस्त अयोध्याके महानबैठे जहां तहां सन्मानकरि प्रशंसाकरतभये सर्वदा प्रशंसा करतरहे तबहूंहृदय विषय अघाउनाम तृप्तनहींभई अर्थात् कहबेमेंरुचि रोज रोज नईबनी रही इति सप्तम हेतु अपनी करुणा की कारणी भक्तन्हके ऊपर ताकीचरचाचलेते चपतनाम संकुचित होतहैं अर्थात्सुनिबे की रुचिनहीं औरशत जो भक्तसो। सुकृत नाम एकबार प्रणामकरे

तो ताके यशको आपबरणत अरुसुनत तृप्त नहीं होत काहूनेव। जे
तें कहत हैं कि फिरि गाउनाम मेरे भक्तने बड़ीकरनी करीत। को
सुनते हम बहुत प्रसन्न होत हैं सो फेर फेरकहो यह सब हेतुनकरिश्री·
रामजू को स्वभाव अनुपम निश्चय भयो तेहतें रामजू ऐसे रामजू
हैं दूसरो उपमा नहीं इति अष्टम हेतु अब जीवको सिखावत हैं कि
श्रीरघुबरको गुणसमूह समुझि समुझि हृदयमें प्रीति को बढ़ाव
जेत कहो कि प्रीति बढ़ायेतें कहा होयगो तेहपर कहत हैं तुलसी
दासकी अनायास नाम सर्वस धनके परिश्रम बिना रामजू के पद
विषैं प्रेमको पसाउ जो प्रसन्नता नाम फल सो पावैगो अर्थात् भग-
वत पदकी प्राप्ति होयगी सो फलहू के फल हैं ॥ १०० ॥

मू० । जाउं कहां तजि चरण तुम्हारे । काको नाम पतित पावन जग
केहि अति दीन पियारे । कौने देव बराइ बिरद हित हठि हठि
अधम उधारे । खग मृग ब्याध पषान बिटप जड़ यमन कवन सुर
तारे । देव दनुज मुनि नाग मनुज सब माया बिबस बिचारे ।
तिन्हके हाथ दास तुलसी प्रभु कहा अपनपौ हारे ॥ १०१ ॥

टी० । पूर्वपदमें स्वभाव कहिकरि अब प्रार्थना करत हैं कि हे रघु-
बर आपके चरणको त्याग करि कहां जाय का हेको दूसरे काको नाम
पतितपावन है जगतके विषै औ काहूके दीन जीव प्रिय है जेत कहो कि
अनेक देवता हैं ताको सेवन करो तेहपर कहत हैं कि दूसरो कौन देव
बराइ नाम जोनि करि अपने बिरदके निमित्त हठि२ नाम हठ करि २
अर्थात् पुण्यभी जन्हको छोड़िकरि अधमन्हको उद्धार कियेते ह अध-
मन्हको नाम कहत हैं तेह नामन्हको अर्थपीछे लिखिआये ऐसे अध-
मन्हको कौन देवताने तार्यौ है अर्थात् आप छोड़ि कोउ नहीं
देवादि जेतनेसो आपकी मायाके बिबस नाम आधीन तेहतें बेचारे
हैं तिन्हके हाथ तुलसीदास हे प्रभु अपनपौ नाम हृदयके अर्थ कहा
हारे नाम कहिकरि क्यों ब्यर्थ करे अर्थात् जो आपे बिबस सो
को कैसे सुखी करेंगे यह हेतुते आपके चरणके शरण हैं ॥ १०१ ॥

मू० । हरि तुम बहुत अनुग्रह कीन्हो । साधन धाम बिबुध दुर्लभ तनु मोहिं
कृपा करि दीन्हो । कोटिहुं मुख कहि जात न प्रभुके एक एकके उप-
कार । तदपि नाथ कछु और मांगिहौं दीजै परम उदार । विषय
बारि मन मीन भिन्न नहिं होत कबहुं पल एक । ताते सहिय बिपति
अति दारुण जनमत योनि अनेक । कृपा डोरि बनसी पद अंकुश

परमप्रेमकहुं चारा यहि बिधि बेधि हरहु मेरो। दुखकौतुक राम तुम्हारो। है श्रुतिविदितउपाय सकलसुर केहि केहि दीननिहोरे। तुलसिदासएकजीवमोह रजुजोइ बांध्यो सोइ छोरे॥ १०२॥

टी० जीवप्रतिभगवानकोकियो जो उपकारसो जनावतहैं यद्यपि अनन्त उपकार हैं तामेंएक २ उपकार जैसेगर्भ विषैं पालन किये ज्ञानदिये इत्यादिसो कोटिन्ह मुखतें कह्यो नजातहै तदपि हेस्वामी कछुऔर मांगिहौंसो आपपरमउदारहौ अर्थात् बहुतबारदिये अब नदेंगे यहकहिकरि याचकको बिमुखनहीं करते अवयाचतहैं इन्द्री संबंधीजो विषैंतामेंमन मछली रूपहै रह्योहै ताकोफलगर्भ बास रूप दुःखसहतहौं अपनोजो कृपाताकोननसी कीडोरिकरो चरनमो जो अंकुश चिन्हसोई बनसी तुल्य बनसीमो चारागुंथ्यो जात है सो इहां परम प्रेम जो प्रेमाभक्ति सोई चारा सदृश यहि विधितें मेरे मनरूप मछलीको बेधिनाम छेदिकरि अर्थात् बझाइकरि मेरे दुख को हरनकरो यामो तुम्हारो कौतुक नाम लीला है हेरामजू याको यहभावहै कि राजन्हके चित्तसिकार विषे बहुतलागे हैं तेह हेतुते लोभ देखावते हैं कि आपको शिकार रूप लीला है वहीकरि मेरो कल्याणहोतहै ऐसेकार्यमेंविलंबनचहियेवेन विषेकल्यानको उपाययोगादि विदितहैं तथासकल देवता प्रसिद्ध हैं परकेह २ को यह दीननिहोरो करेकाहे कितुलसीदासको यहनिश्चयहै कियहजीवको मोहरूपी जेवरी करिजाने बांध्यो है ताहीके छोरेतें छूटैगो अर्थात् राजाको बांध्योजो कैदीताको छोडबेको प्रजन्हकी शक्तिनहींहै॥ १॥

मू०। इहबिनतीरघुबीरगुसांई। औरआशविश्वासभरोसो हरोजीव जड़ताई। चहौं न सुगति सुमति संपतिकछु रिधिसिधि बिपुल बड़ाई। हेतु रहित अनुराग रामपद बढै अनुदिन अधिकाई। कुटिलकर्मलैजाय मोहिं जहं तहं अपनी बरिआई। यह जगमें जहंलगियातनकीप्रीतिप्रतीतिसगाई। तेसबतुलसिदासप्रभुही सों होहिंसिमिटिएकठांई॥ १०३॥

टी०। अपनेयाचनाको स्पष्टकरि कहत हैं औरनाम साधनांतर देवतांतर तेहविषे आशाकरनो विश्वास नाम अवश्य इनते कल्याण होयगो तेहबुद्धिकरिजो भरोसासोई जियकी जड़ताई है ताको दूर करोहेतु रहित नामनिष्काम जहंतहं नाम जेह जेहयोनि मो छिन नाम छिनौ मात्र जैसे कच्छप अपने अंडाको कबहूं भूलत नहीं यह

प्रसिद्धिहै तद्दतप्रतीतिके पात्र पितामातागुरू हैं अर्थात् यह अवश्य कल्याण करैंगे तथाप्रीतिके पात्र पुत्रादिसों सबकीममता एकट्ठीहोय करितुलसीदासके हृदयमा आपै विषेंहोय यह प्रार्थना है ॥ १०३ ॥

मू० । जानकी जीवनकी बलिजैहौं । चितकहै राम सीयपदपरिहरि अबनकाहूं चलिजैहौं । उपजीउर प्रतीति अपनेहुं सुखप्रभुपद विमुखनपैहौं । मनसमेतयातनके बासिन्ह इहैसिखावन दैहौं । स्रवणन और कथानहिं सुनिहौं रसना और न गैहौं । रोकिहौं नयनविलोकत औरहिंशीशईशहीनैहौं । नातानेहनाथसोंकरि सबनातानेहबहैहौं । यहछरभारताहि तुलसी जगजाकोदास कहैहौं ॥ १०४ ॥

टी० । अपने चित्त की वृत्ति को जनावत हैं मनसमेत यह शरीर विषें बासकरति जोइन्द्री सबतेह इन्द्रिन्हकों सिखावत हैं नातानाम पिता मातादि संबंध नेह नाम तेह सब सो जो स्नेह सो स्वामी तें करिके अन्यसब नाता नेहको बहाऊंगो चेतकहो कि सहायरहित निर्वाह कैसे होयगो तेहपर कहत हैं कि तुलसी को छरभार नाम बोझा ताहि नाम तेइ श्री रघुबर को जाको जगत विषें दास कहै-हौं छरभारपद लोकोक्ति है जैसे कोऊ कहतहै कि हम अपनो छरभार औरकोदैदिये अर्थात् दासकेनिर्वाहको बोझास्वामीके ऊपरहै १०४ ॥

मू० । अबलौं नसानीअबन नसैहौं । रामकृपा भवनिशासिरानीजागे फिर न डसैहौं । पायोनामचारुचिन्तामणिउरकरते न खसैहौं । श्यामरूपसुचिरुचिर कसौटीचितकंचनहिं कसैहौं । परबसजानिहंस्यौइन्हइन्द्रिन्हनिजबस ह्वै न हंसैहौं । मनमधुकर पनकरि तुलसीरघुपति पदकमल बसैहौं ॥ १०५ ॥

टी० । भगवत सनमुखभयेपर कहाबिचार करनो सोकहतहैं अब लौंनाम भगवतबिमुखहोकरि जो कालबितीतभयोसो नसानी नाम व्यर्थ नष्टभयो अबनाम सन्मुख होकरि जेतनो आयुर्बल बाकी है सो व्यर्थननष्ट करूंगो श्रीरघुबर कृपाकरि संसाररूपी रात्रिनष्टभईप्रातःकालभयेजागेतो फेर न डसैहौं नामतेहरात्रिबिषैसोवने कों बिस्तार न बिछाऊंगो अर्थात् जबकृपाकटाक्षतें भगवान जीवकों देखतहैंतब अज्ञानरूपी रात्रिसमाप्त होतहै प्रातःकाल तुल्यशरीरादिसो मिथ्या दृष्टि ऐसो बूझिकरि शरीरादि जो संसाररूप ताकेओर पीठिदैकरि भगवत्सन्मुख होनो सोई जागनो भयो तो यह रीतितें जागि करि

रतेह राचिविषै बिछावन तुल्यजो शरीरादि ममता ताकों न बिछाऊंग अर्थात् न करूंगो जागिकरि कहा करनोहै सो कहत हैं नाम रूप सुन्दर चिन्तामणि पायो ताकों हृदय रूपी हाथ ते न गिराऊंगो अर्थात् जो गाफिल होयहै तो हाथते मिल्यौ जो मणिसोऊ गिरिजात है सो बड़े भाग्यतें मिल्यौ जो नाम रूपमणि सो हृदय रूपहाथतें न गिराऊंगो नाम गाफिलहोकरि न भूलूंगो तथा रामरूप जो पवित्र सुन्दर कसौटी तेह विषैं चित्तरूप सोना को कसैहों अर्थात् जब कसौटीसे सोनाकस्योजात है तब शुद्धकहावत है तैसे रामरूप के ध्यानते जब यह चित्त संसार बासना सो न जायगो तब शुद्ध ताकी प्रतीति होयगी परबस नाम अपने बस जानिकरि यह इन्द्री सब मोको हंसतरहीं अर्थात् जीवके आधीन सब इन्द्री हैं सो उलटो हो गयो जैसे बन्दरको कलन्दर नचावैहै तैसे जीवको नचाये इन्द्रिन को नाचनो उचितहै सो इहां बिपर्यय भयो जो बन्दरै कलन्दरकोनचावै है अर्थात् जीवको बन्दरसमान अपने आधीन नाचतेदेखिकरि इन्द्री सब हंसतभई यह अभिप्रायहै इहांइन्द्रिनको प्रबलहोनोसोइहंसनो है अब निजबसनाम अपने बस अर्थात् स्वतंत्रहोकरि न हंसाऊंगो नाम फेरि इन्द्रिन्हके आधीनहोकरि तेह २ इन्द्रन्हके विषय संबंधी बासनारूप नाचनाचूंगों यह भाव है यह नाचते छूटि करि कहा करनो सो कहतहैं मनरूपी भ्रमरकी प्रतिज्ञाकरिके रघुबर चरण कमल विषय बसाऊंगो इहां पनकरि पदद्दिये ताको यह अभिप्राय है कि भ्रमर चंचलहोत है कमलको छोड़िकरि अवरऊ फूलन पर जातहै तेहि २ विषय यह मनरूप भ्रमरको पनकरि नाम अन्यपुष्प सदृश नाना साधन अरु अनेक देवता तेहि २ मो जो बासना करि सन्मुख तेह सबते बिमुखकरि कमल तुल्य जो चरण तामे निरन्तर बसाऊंगो यहभाव है ॥ १०५ ॥

मू०। महाराज रामादृस्यौधन्यसोई । गरुअ गुणरासिसर्वज्ञ सुकृति
 सूरसील निधिसांचुतेहिसम नकोई । उपलकेवटकीश भालु
 निशिचर सवरि गीध समदम दयादानहोने। नाममिलिये राम
 कियेपरमपावन सकलनरतरततिन्हके गुणगानकीन्हें । व्याध
 अपराधकीसाधराखी कौनपिंगला कौनमति भक्तिभेई । कौन
 धौंसोमजाजीअजामिलअधम कौनगजराजधौं बाजिपेई । पंडु
 सुतगोपिका बिदुरकुबरी सबहिसोचकियो शुद्धतालेशकैसो ।

प्रेमलखिकृष्णकियआपने तिन्हको अब सुयश संसारहरिहरको जैसे। कोलखलभिल्लयमनादिखलराम कहिनीचहू ऊंचपदकोह नपायो। दीनदुखदमन श्रीरमनकरुणाभवन पतितपावनबिरद वेदगायो। मन्दमतिकुटिलखलतिलक तुलसीसरिस भोनतिहु-लोक तिहुंकाल कोऊ। नामकीकानि पहिचानि जनआपनो ग्रसतकलिव्यालरखुशरणसोऊ॥ १०६॥

टी० महाराजा जो यो रघुबर सो जाको आदर किये सोई धन्य होतहै तथा गरुअनाम श्रेठ सर्वगुणकोराशि सर्वज्ञता सुज्ञतो नाम पुण्यरूप सूरनाम बीरशीलकोपात्र तथा साधु तेहसमान दूसरोकोई नहीं चेत यहकहो कि श्रीरामजूके आदरकियेतें अत्यन्त नीचजीव न्हनों यह सर्वगुण तथा धन्यता कैसेहोयगी तेहपर कहतहैं उपल जो अहल्यादि सोसमादि साधनहीनरहे केवलनामके लियेते रामजू सकलको परमपावन करतभये आपपवित्र होय सोपावन कहावत है औरन्हकोपवित्रकरे ताको परमपावन कहतहैं सो रामजू के आदर कियेते शूद्रादि जो साधन हीन तिनके गुणगान कियेतें अन्यमनुष्य सबतरत हैं अर्थात् रामजूको जिसके संबंधकरि येहू सब जीवन्हको यश रामायणादि विषय महात्मन्हने गायोहै तेहिके श्रवण कथनते जीवन्ह को कल्याण होतहै अब अवर अधम जीवन को देखावत हैं व्याधने कौन अपराधको साधराखोनाम सब अपराधकियो अर्थात् हिंसाहै जीवन हत्तिनाको सोहिंसा सर्वपापका मूलहै तथा पिंगला जोवेश्या ताकी बुद्धि कौनभक्तिते भईनाम भोगीरही अरुअजामिल कौनधौं सोमनाजोनाम सोमयत्नकियो तथा गजेन्द्र धौंकौन बाजि-पेयि यत्नकोन कियोरह्यो पांडुसुत जोयुधिष्ठिरादि ताकोजन्म कर्म पीछे लिखआये हैं गोपिका सब वेदवाह्य कर्म अपने पतिको त्याग करि जारबुद्धि करतिभई बिदुर दासीसों उत्पन्न रहे कुबरी एक तो कुरूप दूसरे कन्सकीदासी अत्यन्त नीच यह सबको सोधकिये नाम विचारकिये शुद्ध ताको लेशकैसोनाम कहांहै केवल प्रेम देखकरि भगवान् अपनो करत भये तेह सबको यश अब यहकालको विष्णु शिवके यशसदृश शरण विष्ट अन्यजीवनको कल्याण करत हैं कोल-भिल्ल चित्रकूटके निवासी ताको हिंसा जीविका करिखल कहे यमन को इतिहास पुराण प्रसिद्ध है कि सूकरके बझाने मारयो अपने बो-लोसो कहत भयो कि हरामने मोकोमारो यह प्रसंगते रामशब्द

आयो तेहिकरि भगवत्पद प्राप्त भयो यह आदिलेकरिकै सजाती भेदहैं यहसब अत्यन्त नीचहैं राम कहिकरि ऊंचपदको बोनया- योहै अर्थात् जो भगवत् शरणभये सोई श्रेष्ठ हैं यामेंवेदसाखी है सो अगिलेतुकमेंकहै अब प्रत्यक्ष प्रमाणकरि अपनेको देखावतहैं मंदमतिनाम सतअसत बिबेक रहित कुटिलनाम बाहर भीतर और खलन्हको तिलकनाम भूषण तुलसीसदृश तीनोंलोक तीनों कालमें कोऊ नहीं ताहू को अपने नाम की कानि नाम लज्जा तेहतें अपनो जन पहिचानि करि अर्थात् मेरे नाम को अवलंबी दुःखनहीं पावत काहू भावकरि नाम ग्रहणकरै तौ मेराजन है ऐसामानिकरि ग्रासकरत जोकलिकालरूप सर्पसोऊ नाम ऐसो जो मैंताहूको शरणविषें राखत भये यह हेतुन्हकरि यह निश्चय भयोकी जेहजीवको श्रीरघुबर आदरकरैं सोई धन्यहै ॥ १०६ ॥

मू०। ऐसीकोमेरोदेवता कौशलपतिराम । सुभगसरोरुहलोचन सुठिसुन्दरश्याम । सियसमेतशोभितसदाछबिअमितअनङ्ग। भुजबिशालसरधनुधरैकटिचारुनिषङ्ग ।बलिपूजाचाहतनहीं चाहैंएकप्रीति । सुमिरतहीमानैंभलोपावनसबरीति। देहि सकलसुखदुखदहैआरतजनबंधु ।गुणगहिअघअवगुणहरैअस करुणासिंधु । देशकालपूरणसदा बदवेदपुरान। सबकोप्रभु सबमेंबसैसबकोगतिजान । कोकरिकोटिक कामना पूजै बहुदेव । तुलसिदासंतेहिसेइयेशंकरजेहिसेव ॥ १०७ ॥

टी०। नीकोपददिये ताहीकोछबि वर्णनकरिकैदिखाये यहतुक ते स्वभावको परत्वकहे यहविषेंदानको परत्वदिखाये यामेंव्याप- कताऐश्वर्य कहिकरि सर्बोपरि ईश्वरता जनाये सोभास्वभावगुण दान ऐश्वर्यअद्वितीय जेह स्वामीविषैं ताको त्यागि कोटिन्ह कामना करिकै अन्यबहुत देवन्हको पूजै तुलसीदासकहै किरेमन सबको छोड़ि करि तेहिको सेवन करुजाको शिवजू सेवतहैं अर्थात् सब देवन्हके मुकुटरूप जोशिवजूहैं सोऊ ताके सेवना किये ताते सबके स्वामी श्रीरघुबर हैं यह सिद्धान्तभयो ॥ १०७ ॥

मू०। बीरमहा अवराधियेसाधेसिधिहोय। सकलकामपूरणकरै जानेसबकोय। बेगिबिलम्बनकीजियेलीजैउपदेश। महामंत्र जपियेसोईजोजपतमहेश । प्रेमबारितर्पणभलोघृतसहजसनेह।सन्ततसमिधअग्निक्षमाममताबलिदेहु। अघउचाटि

मनवसकरैमारैमदमार।आकरषैसुखसम्पदासंतोषविचार। जेयहिभांतिभजनकियोमिलेरघुपतिताहि। तुलसिदासप्रभु पथचढ़्योजोलेहुनिबाहि ॥ १०८ ॥

टी०। नाना कामना मारन मोहनादि सिद्धि के अर्थ अनेक तुच्छ देवन्हको पूजनहोतहै सो रूपकरि कहतहैं और महानाम जो श्री रघुबर ताको अराधन करु अर्थात् तुच्छ वीरन्ह के साधे नाना अपने वशकिये एक २ तुच्छ वासना पूर्ण होति है श्रीराम रूप बड़ेबीरके साधेते लोक परलोक दोऊविषय सर्वसिद्ध हो।ति हे चेतकहो।कि तुमहीं कहतहो।कि औरऊ कहे हैं तेहपरकहतहैं कि जाने सबको।ईनाम ब्रह्मादि मनुष्यपर्यंत सब जानतहैं रामरूप बीरके आराधन करबेमो बिलंबमतिकरु शीघ्रउपदेशको लैकरि पूजनकरु ताकी बिधि कहतहैं महामंत्र जो रामनाम प्रेमरूपजल को तर्पणभलो होमकेवास्ते घीचहिये सो सहजस्वाभाविक जोस्नेह सोई घृत लकड़ीचहिये सोसंशयनाम यहकर्तव्यतातेंसिद्धिहोयगी किधौंनहीं सोई समिधनाम लकड़ी क्षमा जोगुण सोई अग्नितुल्य बीरके आराधनमो बलिदान देतहैं सोइहां ममता जो देहादि विषैं ताहीको बलिहो बिधिसमाप्त भयेमोहनादिफलसिद्धि हो।ने। चहिये सोदिखावतहैंकि रामरूपबीरके पूजनकरिकायिकवाचिक मानसिक पापको उच्चाटन करुमनको वसकरैमद मारको मारै सुखकासंपदा जोसंतोष बिचारादिसोआकरषैखीचैअर्थात्मोहित करि स्थिरकरै यह रीतिते सिद्धिहै।तिहै जोयहप्रकारजन कियै ताकोरामजूमिलें अबतुलसीदास यहपथके ऊपर चढ्यौहै परिहे प्रभुजा निबाहलेहु तब आपतक पहुंचेगो यह अर्थ है ॥ १०८ ॥

मू०। कस न करहुकरुणाहरेदुख शमनमुरारि। त्रिविधितापसं- देहशोकसंशयभयहारि। यहकलिकालजनितमलमतिमंद मलिनमन। तेहिपरप्रभुनहिंकरसंभारकेहिभांतिजियजन। सबप्रकारसमरथप्रभोमैंसबबिधिदीन। यहजियजानिद्रवो नहींमैंकर्म बिहीन। भ्रमतअनेक योनिरघुपति पतिआतन मोरें। दुखसुखसहौंरहौंसदाशरणागततोरें। तोसमदेवन कोउकृपालसमुझौंमनमाहीं। तुलसिदासहरितोषियेसो साधननाहीं ॥ १०९ ॥

टी०। स्वामीतें बिनैकरतहैं संदेहनाम चिंतासंशयनाम अपने

कल्याणको निश्चय नहीं यहकलिकालतें उत्पन्नजोमलतेहितेंमलीन मनतया जन्मतें मतिमंद तेहुपर प्रभु जो आप संभारते नहींतो यह जनकेह प्रकारतें जोवैसब प्रकारआपसमर्थ अरु मैं सर्वविधितें दीन यहजियमेंजानिऊं कछुद्रवनहीं करतेतौ आपको कौनदोषमैं कर्म जो भाग्यतेहकरि रहितहौं अर्थात् हमकों छोड़ियाको दूसरी गति नहीं अरु हम समर्थहैं ऐसाबूझिकरि जोकृपा नहीं होतो तौ मेरे कर्मको दोषहै यद्यपि मैं भाग्यहीन हैं।अरु आपमोकों त्याग किये तद्यपि मेरो यह निश्चयहै कि अनेक योनि भ्रमण करते तहां तहां ऐसाई बूझौंगो कि रामजू मेरेपतिहैं और नहीं दुखसहैं अथवा सुख सहैं परि सर्वदा तुम्हारे शरण प्राप्तहैं आपऐसो दूसरो देवता कृपाल कोऊनहीं यह मनमों समुझतहैं। तेहितें आपके शरणहैं। पर तुलसी दासको सो साधननहींहै जेहते हे हरि तोपिये नाम तुमको प्रसन्न करें अर्थात् अपनी ओर देखि तुलसी को कल्याण करो मैंतो भाग्य उपाय दोऊतें रहित हौं॥ १०९ ॥

मू०। काहूकेहि कहिये कृपानिधे भवजनितविपतिअति। इन्द्रीनकल विकलसदानिजरस्वभावरति। जेसुखसंपतिस्वर्गनर्कसततसंग लागी। हरिपरिहरिसोइ यत्न करतमनमोरअभागी। एअति दीनदयालदेवसु नमनअनुरागे। जोनद्रवहुरघुबीरधीरकाहेन दुखलागे। यद्यपिमैंअपराधभवनदुखसमनमुरारे। तुलसिदास कहंआसइहै बहुपतिन उधारे॥ ११० ॥

टी०। चेतकहोकि अपनी दुखऔरतें कहेतेहुपर कहतहैं कि हे कृपानिधे आपकहो कि हमकेहतें संसारतें उत्पन्न जो अति विपति ताकहै अर्थात् धनादि तुच्छकामनाकों औरकुदेवता देसकतहैं परि संसारकेदुख छोड़ाइवेकों आपछोड़िदूसरेकी शक्तिनहीं अरुमैं अपनो दुखकेतनो कहेंकि सकलजो इन्द्रीसो सर्वदा विकल होकरि अपने अपनेस्वभावतेंप्रीतिकरेहैं अर्थात मैंएकओर इन्द्रीअनेकताके खैंचा खेंचोमो जन्ममेरो व्यर्थजातहै मन इन्द्रिन्हको अधिष्ठाता मनसोकौन सुख संपति स्वर्गनर्क दोऊ विषैं निरंतर संगलग्योहै हेहरि आपकों छाड़िकरिसोई नामवाहीके अर्थयत्नकरतहैं ऐसोभाग्यहीनमेरोमन है अर्थात् स्त्री पुत्र विषैभोगादिकूकर शूकरयोनिनरक रूपताहूमें बन्योहै तोताके अर्थयत्नकरनो अभाग्यको अवधिहै सर्वकालमें संग रहनेवाले तथा सहायकर्ता जोमन आदितेहु सबकी उलटी रीति

भई तेहसंबन्धकरि मैंजोजीव रूपसो अतिदीन भयोपरि सज्जनन्ह के मुखतें हेदेव आपकों अतिदयाल सुनि करि मनते अनुरागे नाम प्रीतियुक्त प्रसन्न भये अपमेरे सन्मुखभये हूं जोनहीं द्रवते हेरघुबीर धीर तौमोकोंकाहे न दुखलगे यहामेरो दुख आपको काहे नलगे है जेहतें कृपा नहीं करते हे स्वामीचेत कहो कि अपनेको भाग्यहीन तथापापरूप जानतहो तौमेरेशरण होबेकोंक्यौंहठ करतहो तेहपर कहतहैं कियद्यपि मैं अपराधको मंदिरहैां तथापि आप सब दुखके शमन कर्ताहो हेमुरारि तुलसी दासकों आसयही है कि आपबहुत पतितन्हको उद्धारकियेतो क्या एकमैंहीं रहिजाऊंगो अर्थात् आसा बलवती अपने जातिजो अनेक अधम पतित गरीब जीव तेहसबकी सुगति विचारकरि छूटति नहीं ॥ ११० ॥

मू०। केशव कहि नजाइ काकहिये। देखततवरचनाबिचित्रहरिसमु-
झिमनहिंमनरहिये। शून्यभीतिपरचित्ररंगनहिंतनबिनलि-
खाचितेरे। धोयेमिटैनमरैभीतिदुख पाइयएहितनहेरे। रबि
करनीरबसैअतिदारुनमकररूपतेहिमाहीं। बदनहीनसोग्रसै
चराचरपानकरनजेजाहीं। कोउकहसत्यझूठकहकोऊ युगल
प्रबल करिमाने। तुलसिदास परिहरै तीनि भ्रम सो आपन
पहिचाने॥ १११

टी०। हे केशव कह्यो न जाय है तो क्या कहिये अर्थात् कहबे को रुचिहोय है पर बचन की गति नहीं होतितो कैसे कहैं पिण्ड ब्रह्माण्ड रूप जो तुह्मारी रचना आश्चर्य ताको देखत समुझि करि मनहींमन रहत हौं अर्थात् बचन ते नहीं कहि सकाते पूर्व कह्यो बिचित्र सोरचना देखावतहैं शून्यरूप भीतिके रूपपरचित्र नाममूर्ति रंग नाहिंनाम रंगबितरेक औजोनहिंके जगह बहुपाठ होयतौबहुत रंगकोचित्रनाम स्वरूप यह अर्थहै ताको शरीर बिना जो कोऊ चि-तेरोताने लिख्यौहै अर्थात् शून्य जो माया जो रूप नहीं सोई भीति नाम आधार तेहिकेऊपर समस्त ब्रह्माण्ड रूप बहुत प्रकारको चित्र रंगनाम नानायोनिरूप औार जो पिण्ड माचको ग्रहण होय तो नेत्र नासिका हस्तचरणादि सोई चित्ररंग सदृश बहुत हैं अरुनहिं पाठ को यह अभिप्रायहैकि नानाचित्र प्रत्यक्षदेखिपरतहैं परजैसे चितेरा हरित पीतादि सौंकरि मूर्तिको लिखैहै तैसा रंग इहां नहीं देखि परत लिखनेवाले जो चितेरा ताको शरीर नहीं नाम चैतन्य रूप

निर्गुण ब्रह्मसो विश्वको करता है क्योंकि चैतन्य व्यतिरेक जड़ जो माया तथा सत्वगुणादि ताको कर्तव्यता नहीं संभवै तेहि ब्रह्मरूप करता को वेद अरूप अनाम कहत हैं यह हेतुते तन बिनु कहे चित्र रंग धोयेते मिटत नहीं और मरने को भय दुख प्रतीति होत है चेतकहो कि ऐसो कहां देखिपड़ै तेहपर कहत हैं कि यही शरीर हेरे नाम ढूंढेतें पाइ नाम मिलत है अर्थात् जानि परत है इहां यह जनावत हैं कि जो कोऊ चित्ररंग देखिपरत है सो धोयेते मिटै है यह योनिरूप अथवा इन्द्रियरूप चित्ररंगको कितनो जलादि करि धोओ परि मिटत नहीं अर्थात् यह दृष्टिको हेतु अनादि है तथा चित्रजड़ होत है वाको मरनेको भय दुःख नहीं होत सो यह चित्र के मरने को भय दुख प्रतीति होत है यह दोऊ तुकको यह भाव है कि पहिले रचना को विचित्र कहे तेहि विचित्रता को स्पष्ट करि जनाये यह रीतितें कि कारीगरी शून्य कह्यो तब भीति कहनो नहीं चाहिये फेर जब शून्यरूप भीति तब चित्ररंग होनो असंभव है तथा जब चित्ररंग कहे तब शरीर व्यतिरेक चितेरेको लिखनो अघटित है तथा जब चित्र भयो तब धोयतें न मिटै यह आश्चर्य है अरु चित्रजड़ होत है ताको मरण करि भयदुख कहनो अति विचित्रता है यद्यपि सर्वबात असंभव है तथापि अपने शरीर मो विचारकियेतें प्रत्यक्ष देखि परत है यह भाव है फेर आश्चर्य को देखावत हैं मृगतृष्णाको जलतेहि विषैं अति कठिन मगररूप बसे हैं अर्थात् मृगतृष्णातुल्य संसार प्रवाह विषै मगररूप जो कालनिमेषक्षण वर्षपर्यंत तद्रूप बसे हैं सुखहीन सो मगर जड़ चैतन्य सबको ग्रास करत है तेहि जलको पानकरनेको जोजात है अर्थात् सुख नहीं देखि परत परि जड़ चैतन्यमात्र कोऊ तेहि कालरूप मगरतें बचौ नहीं यह विचित्रता भयो कि मृगतृष्णा मों प्रथमते जल नहीं तहां मगरको बसनो अति विचित्र ताऊपर सुखहीनको समस्त ब्रह्माण्ड ग्रास करनो महान असंभव तहां यह संदेह भयो कि चराचरको ग्रास होनो कह्यौ सो महानन्हि के हृदय करि भगवत भक्त के ऊपर कालको वेग नहीं अनेक वचन करि देखिपरे है योगवाशिष्ठमो तथा आपै गोसाईं रामायण विषैं कह्यौ काकभुशुण्डके वर्णनमो कियहां प्रलय भये हूं काकभुशुण्डको नाश नहीं एहि संदेहको छोड़ावत हैं कि जो मृगतृष्णाके जलको सत्य मानि पान करबेको जात है ताको कालरूप मगरग्रास करत है अर्थात् जो जीव अविद्याके आवरणतें अज्ञानी हैं मृगतृष्णारूप जो संसार प्रवाह जन्म

मरणतथा देहादिकों सत्यमान्यौहै ताकोंकाल रूपमगर ग्रासकरतहै तेहतें विपर्यय परमेश्वरके शरण करि आत्मा की यथार्थ स्वरूप नित्य चैतन्य आनंद मूर्ति ताकों जानि परयौ तेहके निकट मृगतृष्णा झूठ मगर झूठ ग्रास करनो झूठ तथा पान करनो झूठ केवल परमेश्वर है दूसरी वस्तु नहीं तबको केहिको ग्रास करै यह भाव है कोऊ यह जगतकों सत्य कहतहै अर्थात् पूर्वमीमांसा कर्मवादी सत्य मानतहैं तथा कोऊझूठकहतहै अर्थात् उत्तर मीमांसा वेदांतशास्त्र मिथ्या कहत है युगल प्रबल करि मानो नाम सांख्य शास्त्र प्रधान पुरुष दोऊ कों जगतकों कारणरूप सत्यमानत हैं सोतुलसीदास कहतहैं कितीनों सिद्धांतको भ्रमरूप बूझिकरि त्यागकरै सोआपन नाम अपनो स्वरूप पहिचानै याको अत्यन्तगूढ़ अभिप्रायहै किजौसत्य मानैतौ मिथ्याकी अपेक्षातें सत्य होतहै तैसेजो असत्य मानैतोसत्यके अपेक्षातें मिथ्या होतहैअर्थात्सत्यझूठदोऊकेआग्रहविषैंद्वैतबन्यौहै अरुजाकेमतमों दोऊ नित्यहै तहां तोप्रकटद्वैतहैतो यावत्द्वैतहैतावत् स्वरूप ज्ञान नहींयह हेतुतें कहेकि सतअरु असत तथा सदासतको आग्रहत्याग करि परमेश्वर व्यतिरेक द्वितीय वस्तु नहीं ऐसो निश्चय जाकोताको यथार्थ स्वरूपज्ञानको प्रकाशहै यह अर्थहै ॥ १११ ॥

मू०। केशवकारनकवनगोसाईं। जेहिअपराधअसाधु जानिमोहिं
तज्यो अज्ञकीनाईं। परमपुनीत सन्तकोमलचित तिन्ह हतुम-
हिंबनिआई।तौकतविप्रव्याधगनिकहितारयौकछूरहीसगाई।
कालकर्मगतिअगतिजीवकीसबहरिहाथतुम्हारे। साइकछु क-
रहुहरहुममतामम फिरउनतुमहिंबिमारे। जौंतुमतजहुभजोंन
आनप्रभुयहप्रमानपनमोरे।मनबचकर्मनर्कसुरपुरजहंतहरघु-
बीरनिहारे। यद्यपिनाथउचितनहोतअसप्रभुसोंकरौंढिठाई।
तुलसिदासमीदतनिशिदिनदेखततुम्हारनिठुराई ॥ ११२ ॥

टी० पूर्व पद विषें विचित्र ऐश्वर्य कहिकरि अवफेर अपनी गरज सुनावतहैं कि हे केशव हे गोसाईं कौन कारणहै किजौने अपराधतें असाधु जानिकरि मोकों अज्ञकी नाईं त्याग करत हो अर्थात् बड़े पापात्माके अंवकों जानिऊ करि शीघ्र कृपाकिये एकमैं सो एतनेदिनसें बिनय करतहूं ताकों सुनते नहीं सोकौन हेतुहै कि सब अधमन्हके अर्थ मित्रभये मेरी बारअज्ञ बनत हो चेत कहोकि हम पापात्माको नहीं ग्रहण करते तौ परमपुनीत जो सन्तकोमल चित्त जाको तिन-

तें तुमको जौवनी बनाई होती अर्थात् केवल सज्जन मात्र कों ग्रहण करते तौ क्यों अजामिल व्याधा गनिकाको तारयौ क्या इन्ह सबन्हतें कुछ सगाई रहीनाम कोई नाता रह्यो अर्थात् जौ यह अधमन्ह को आपतें कोईनाता होतो तो अपने चितकों बोधहोतकि भगवान्‌सर्वदा सज्जनन्हकों ग्रहण करतहैं व्याधादि जो अधम ताको नाताके हेतुतें ग्रहणकिये हौ तथा अपनी ऐश्वर्य देखोकि काल जो सर्वको नाश तथा कर्मजो समस्त ब्रह्माण्डको बांधिरह्याहै अरु जीवकी गतिनाम बैकुंठादिकीप्राप्ति अगतिनामनर्कादिप्राप्तिसो सबहेहरितुम्हारेहाथमें है अर्थात् आपके आधीनहै तौ यहईश्वरता तथाअपनी बिरदावली विचारकरि ऐसो कर्तव्यताकरो जोमेरीदेहादि सम्बन्धी ममताहरो जेहतें तुमको विस्मरण करि हम फिर उन नाम विमुख न होंय चेत समर्थहो मेरो कुछ बसहै नहीं जो अवश्य मोको त्याग करतहो तो मेरे पणको यह प्रमाण है कि आपको छोड़िदूसरे प्रभु जो इन्द्रादि देवता ताको न भजूंगो मन बच कर्मकरि आप नरकमो डारिदेव अथवा देवलोक पहुंचावो जहां तहां रघुबरको निहोरा है अर्थात् जहां कोई पूछेगो कितू कौनहै तहां यही कहूंगो कि श्रीरामजू को गुलामहूं उनके दिये फलको भोगकरतहूं यद्वा जहां तहां नर्क स्वर्ग विषें मोकों रक्खोगे हेरघुबीर परितुमतें निहोरोकरेंगे अर्थात्कहीं रक्खो विनयकरनो न छोड़ूंगो यह अभिप्राय है पूर्व अपने क्रोधवस स्वामीतें अतिकठोर वचन कछु रहो सगाई यह कह्यो सोअति अनुचित बूझिंतेह चूकको सम्हारत हैं कि यद्यपि हेनाथ प्रभु सों ऐसी ढिठाई करनो उचित न होय पर क्याकरें तुलसीदाससीदतनाम दुख पावतहै रातिदिन अर्थात् कलिकाल मोको पीसतहै तेहपर तुम्हारी निठुराई देखतदुखमें दुखहोत है दुखियाके वचनको प्रमाण नहीं है यहविचारि अपराध क्षमाकरो यह अर्थ है ॥ ११२ ॥

मू० । माधवअबनद्रवहुकेहिलेखें ।. प्रणतपालपन तोर मोरपनजियउंकमलपददेखें । जबलगिमैंनदीनदयालतैंमैंनदासतैंस्वामी । तबलगिजोदुखसहेउंकहेउंनहिंयद्यपिअन्तरयामी । तैंउदार मैं कृपणपतितमैंतैंपुनीतश्रुतिगावै । बहुतनातरघुनाथतोहिं मोहिं अबनतजेबनिआवै । जनकजननिगुरुबंधुसुहृदपदिसबप्रकार हितकारी । द्वैतरूपतमकूपपरौनहिंअसकछुयतनविचारी । सुनु

अदभ्रं करुणा।वारिजलोचनमोचनभयभारी। तुलसिदासप्रभुतव प्रकाशबिन संशयटरतनटारी ॥ ११३ ॥

टी० । अपराध क्षमाकरायविनय करतहैं कि हेमाधव कौने लेखे तेनहीं कृपाकरतेतेहु लेखाको जनावतहैं कि आपको बिरदरूप पन यहहै जोप्रणतनाम एकबेर प्रणामकरे ताकों पालनकरनो तथामोर पनहै कि जब चरणकमल देखूं अर्थात् शरणपाऊं तबही जीवेंचेत कहै। कि इतनेकाल पर्य्यन्त ऐसाहठ क्योंन कियो ताको यह हेतु है कि अबलगि मैं दीन तथा दास नहींभयों अरु आपको दयाल यथा स्वामीनजान्यों तावत् जो दुखसह्यो सो यद्यपि आप अन्तर्य्यामीनाम हृदयविषैं बैठे हो परिकहेउ नहीं अब जो हठकरि विनय करत है सो यह हेतुतें एकसम्बन्ध होतहै सो अपनो दुख सुख तातें कहत है अरु मोकों आपकों तो बहुतसम्बन्धभयो मैं प्रणत आपप्रणतपाल हैं मैंदीन तुम दयाल हमदास तुमस्वामी आपउद्धार मैंकृपण तुमपुनीत मैं पतित यहपांच सम्बन्धभयो सोहम आपन गरज बसनाताल्गाय लिये सोनहीं जीवतें आपको यह सनातन सम्बन्ध है चेत पूछो कि यह को कहैहै तौ वेद आपको स्वरूपहैं सोगावै है तो हे रघुनाथजी आपकों मोकों बहुत नाता भयो अब त्याग किये नहीं बनिआवे है पांचसम्बन्ध ऊपरकहे तथा मातापिता गुरुअरुभाई मित्रस्वामी तैसे अन्य जो हितकारी सबप्रकार आये हो सो इतने सम्बन्धकों बिचार करि कृपाकरो। द्वैतरूप जो हम हमार सोई अंधेरोकूप तामें हम नहीं पडैं ऐसो कछु यत्न विचारो चेत कहै। कि अपने कल्याण को यत्न आपकरनो चहियेहमतें क्या कहतेहो तौ सुनो हेअदभ्र करुणा नाम समूहहै कृपाजाको हेवारिजलोचन हे भयमोचन भारीहै प्रभु तुम्हारे प्रकाश बिन तुलसीदासको संशयनाम संसाररूप लोग अपने पौरुष करि टारे नहीं टरत अर्थात् भगवत् अनुग्रह बितरेक जीव अपने पौरुषतें सुखी नहीं होते यहविचारि अनुग्रह करो हेस्वामी यह अर्थ है ॥ ११३ ॥

मू० । माधोमोसमानजगमाहीं । सबबिधिहीनदीनमलीनअति लीन विषय कोउनाहीं । तुम समहेतुरहितकृपालआरत हित ईश न त्यागी । मैं दुखशोक बिकलकृपालकेहि कारणदया न लागी । नाहिनकछुअवगुणतुम्हारअपराधमोरमैंमाना । ज्ञानभवनतन दियहुनाथसोउपायनमैंप्रभुजाना । बेणुकरीलश्रीखण्डबसन्तहि

दूषणऋतुपालगावै। साररहितहतभाग्य सुरभिपल्लवसोंकाहू-डुकहँपावै। सबप्रकारमैंकठिनदुखहरिहैदृढ़विचार जिय मोरे। तुलसिदासप्रभुमोहशृङ्खलाछुटिहितुम्हारेछोरे॥ ११४॥

टी०। हे माधव जो मेरीमन्दताको देखोगे तौ मैं आपकाहतहूं कि मो समान जगतमो मन्दनहीं सबबिधि हीननाम सब साधन रहित दीन नाम पौरुष हीन मलीन पाप रूप तथा विषय बिषैं अति लीन दूसरा नहीं जैसे हम मन्दता के अवधि तैसे तुम समान कारणरहित कृपाल तथा आरतके हितकारी ईश जो आपताको त्यागकरि दूसरो नहीं ऐसो स्वभाव कोमल आपको तब मैं दुःख शोकतें व्याकुल ह्वैकरि बारबार पुकारतहौं केहकारणते आपको दया नहीं लागैहै अब अपनीओरदृष्टिकरि अपनो अपराध मानतहैं सो जीवको मनुष्यशरीर पायकरि भगवत् बिमुख होनो मुख्य अपराध है यहकहे चेतकहो कि अपनो अपराध जानत हौ तब बार२ मोकों क्योंदूषण देतहौ तेहपर कहत हैं वेणुजोबांस करील को जो वृक्ष जाको पत्ता होते नहीं सो श्रीखण्ड नाम चन्दन को अरु बसन्तऋतु को मिथ्या दूषण लगावै है काहे कि बांस सार रहितहै अरु करील हतभाग्यहै नामभाग्यहीन है जाके भाग्यमो ब्रह्मा लिखबे न किये तब सारहीन जो करील ताको सुरभिनाम सुगन्धचन्दन कैसेदे तथा भाग्यहीन जो करीलताकेपल्लव बसन्तऋतु देवेसो कहौ कहांपावै अर्थात् मन्दबुद्धिन्ह को यह सनातनरीति है कि अपने ओर न देखनो ईश्वरको दोष लगावनो तैसाई मेरो बचनहै यहभावहै यद्यपि मैं भाग्यहीन तथा अपराधीहौं तथापि तुलसीदास को प्रतीतिहै कि मोहरूपी बेड़ी आपके छोरेतेछूटैगी कितनेशब्द अत्यन्तसुलभहैं तेहशब्दनको अर्थ नहींलिखे॥ ११४॥

मू०। माधोमोहफांसक्योंटूटै। बाहिरकोटिउपायकरियअभि-अन्तरग्रन्थिनछूटै। घृतपूरणकराह अन्तर्गत शशिप्रतिबिम्ब देखावै। ईंधनअनललगायकल्पशतअघटतनाशनपावै। तरु कोटरमहँबसबिहंगतरुकाटेमरैनजैसे। साधनकरियबिचार हीनमनशुद्धहोइनहिंतैसे। अन्तरमलिनबिषयमन अतितन पावनकरियपखारे। मरइनउरग अनेक यत्नबालमीकबि-बिधिबिधिमारे। तुलसिदासहरिगुरुकरुणाबिनुबिमल बिवे-कनहोई। बिनबिवेकसंसारघोरनिधिपारनपावैकोई॥ ११५॥

टी० । फिर अपनी मन्दता देखावत हैं हे माधव मोहरूपी बन्धन कैसे टूटै काहेकि बाहर कोटिन्ह प्रकारको उपाय स्नान पाठादि करैहैं अभिग्रन्तर नाम हृदय को ग्रन्थि जो गिरह नाम जड़ जो देहादि तेहमे। चैतन्यकी प्रतीति तथा जीव जो चैतन्य तेह विषे शरीर बुद्धि जो ग्रन्थिसो छूटति नहीं तो केवल बाहरके कर्तव्यताते अज्ञान कैसेजाय यह भावहै पूर्वोक्तसो दृष्टांत देत हैं प्रतिविम्ब के अवटेतें आकाशके चन्द्रमाको नाश नहींहोत है तथा वृक्ष काटेतें कोडरको पक्षी नहींमरत तैसे सत जो परमेश्वर असत जोसंसार अरुपरमेश्वर केस्वरूपकोबोधक जीवात्मासंसारके स्वरूपको बोधक जोदेह तेहविचार व्यतिरेक बाहरके साधनकरि मननहींशुद्धहोत तीसरो दृष्टांत देखावत हैं अंतःकरणसो विषयकरिमन तो अति मलीन ह्वैरह्योहै ऊपरते शरीरको पखारे नाम धोयकरि पवित्र करैहैताकीऐसी समताहै कि बालमीकनाम माटीको समूहएक जगह ऊंचेहोकरि बेमवटि कहावतहै ताको ऊपरतें अनेक यत्न करि विविधिप्रकारकेमारतेंवाकेभीतरको सांप नहींमरततौ यह संसारकैसेजायतेहपरकहत हैं तुलसीदासकिप्रथमभगवत कटाक्ष तेहद्वारा सत्गुरुकी प्राप्तितबताकी कृपातेहबिनुबिमलनाम सत असत को बिबेक नहींहोत तेह विवेक बिन संसार जो भयानक समुद्ररूप ताके पारको कोउ नहीं पावत यह क्रम है ॥ ११५ ॥

मू० । माधव असितुम्हारियहमाया। करिउपायपचिमरियतरिय नहिंनबलगिकरहुनदाया । सुनियगुनियसमुझियसमुझा- इयदशाहृदयनहिंआवै । जेहिअनुभवबिनमोहजनितदारुण भवबिपति सतावै । ब्रह्मपियूषमधुरशीतल जौंपैमनसो रस पावै । तौकतमृगजलरूपबिषय कारण निशिबासरधावै । जेहि के भवनबिमल चिन्तामणिसोकतकांच बटोरै । सपने परबस पर्यौ जागि देखत केहिजाइ निहोरै । ज्ञानभक्ति साधनअनेकसबसत्यझूठकछु नाहीं । तुलसिदासहरिकृपा मिटै भ्रम यह भरोस मनमाहीं ॥ ११६ ॥

टी० । इहांशब्दतथाअन्वयकी कठिनतानहींहै यहहेतुतें बहुत तुकन्हको शब्दार्थछोड़िकरिअभिप्रायमात्रकहेंगे यहतुकमो माया कीकाठिन्यतथा भगवत् कृपाकरिताको निवृत्तिजनाये पचिमरिय नामतेह उपायके करतेमरतहै कृपाव्यतिरेक माया नहीं छूटति है

ता। सोईतु कहत हैं सज्जनन्हके सुखशास्त्रको अभिप्राय सुनत हौं अरु आपजगनियनाम विचारत हौं ताको समुझि औरन को समुझावत हौं पर हृदय विषें दया नाम तेह समुझ को फल रूप स्वरूप नहीं आवे है जेहदयारूपअनुभवव्यतिरेकसोहतें उत्पन्नकठिन जो संसार रूप विपत्ति सोदुख देति हैदया नहीं आयवेकों लक्षण कहत हैं ब्रह्म रूप अमृतमधुरता शीतलताको अवधि भूतसों रसजोपै मनपावे तो काहेको मृगतृष्णारूपजो संसार संबन्धी विषय तेह के अर्थदिनरात दौड़े अर्थात् यावत विषयमोंरुचिहै तावत्परमेश्वरके स्वरूपकीप्राप्ति नहींपूर्वसिद्धान्तमोंदृष्टान्तदेत हैं चिन्तामणि रूप भगवान कांचरूप विषयस्वप्नविषें परवसपरयौ अर्थात्यहदेखत भयोकि काहूने मोकों बांध्योहैतो तेहस्वप्नमें दीनहोकरि छूटवे के अर्थ बहुतन्ह ते अनेक प्रार्थना करतहै जबजाग्यो तब देख्योकि झूठहै तबकेहूका निहोरा करेहूहांस्वप्नतुल्यअज्ञानअरु यह उपायतें सुख न भयो यहतें होय गो ऐसेनानाप्रयाससोईस्वप्नविषेंबहुतन्हतेछूटवेके अर्थ प्रार्थना सदृश भये भगवत स्वरूपकी प्राप्तिसोई जगनो है यह समता है वेद प्रति पाद्य सब साधन सत्य हैं मै तुलसीदास के मन विषें यह विश्वास है कि भगवतकृपा करि संसार धर्म छूटैगो अन्यथा नहीं अर्थात् हम ऐसे मन्दजीवको अपनेसाधनके बल करि संसार को निवृत्ति अति कठिन है केवलआपके अनुग्रहकी आश है ॥ ११६ ॥

मू०। हेहरि कवनदोषतोहिदीजै । जेहिउपाइ सपनेहुं दुर्लभगति सोइनिशिवासरकीजै । जानतअर्थअनर्थरूपतम कूपपरबयहि लागै। तदपिनतजतश्वान अजगरज्यों फिरतविषय अनुरागै। भूतद्रोहकृतमोहवश्यहितआपनमैनविचारो । मदमत्सरअभि मानज्ञानरिपुइनमहंरहनिअपारो । वेदपुराण सुनत समुझत रघुनाथसकलजगव्यापी । भेदनाहिं श्रीखण्डवेणुइवसारहीन । मनपापी । मैंअपराध सिंधु करुणाकर जानत अन्तर्यामी । तुलसिदासभवव्यालग्रसिततव शरणउरगरिपुगामी ११७ ॥

टी०। अपनी मन्दता जनावत हैं अर्थजो इन्द्रिन्हकों विषयसों अनर्थ रूपनामदुखरूपहै यहमोलगेतें तमजो अज्ञान रूप कूप तामो पडंगे यह जानतहौं तद्यपिनहीं त्यागकरिते श्वानजैसे कुत्तीके पीछे लग्यो सोकुत्ती काटिखावेहै तथा और कूकरसबेकाटत हैं तेहि करि घाव होतहै कीड़ापड़ि शरीरनष्ट होतहै तैसे अजनाम छागीकेरीकेपीछे-

सूंघ सूंघत फिरतहै खरजो गदहाहो जात खातहै इतनो दुख होत है पर त्यागनहीं करत विषयमें अनुरागे फिरतहै इहां सर्व विषय के सभ्यनोखोप्रगटहै यह निमित्त वाहीकेपर बसता करि जो दुख समुद्र सो दृष्टान्त करिदेखाये जीवन्ह ते द्रोह किये अज्ञान के बस अपनो हित न विचारे ज्ञान रिपुनाम अज्ञान अगारा नाम मद मत्सरादि जो बहुत निषेधरूपताहीमे। मेरी रहनिहै तोकैसे आप मिलो यह भावहै भेदतनाहीं नाम तैसो आचरण नहीं होत अर्थात् सुनि बूझि करिभी सर्वभूतविषे परमेश्वर को नहीं देखत नहीं भेदन करवे सो दृष्टान्तदेतहैं कि जैसे श्रीखण्ड जो चन्दन सब वृक्षनको सुगन्ध देत है पर निकट जोबांसताकोनहीं काहेकि सारहीनहै तैसेमेरो मनजो पाप रूप तेहिबिषें वेद पुराणके बचनको सिद्धान्तनहीं पैठत अर्थात्तैसो आचरण नहीं करत मैं अपराधको समुद्र अरु आप अन्तर्यामी सब जानतहौ हे करुणाकर तथापि संसाररूपी सर्पतें ग्रसित जो तुलसी दास सो तुम्हारे शरणहै हे गरुड़गामी ११७॥

मू०। हे हरिकवन यतनसुखमानऊं। ज्योंजगसदन तथा मम करणी
सबप्रकार तुमजानऊं। जोकछुकहियकरिय भवसागरतरिय
बच्छपगजैसे। रहनिआनिविधि कहियआनहरिपद सुख पाइ-
यकैसे। देखतचारु मयूरनयनसब बोलसुधा इवसानी। सविष
उसीआहारनिठुरअस यहकरनीवहवानी। अखिलजीववत्सल
निर्मत्सरचरणकमलअनुरागी। तेतवप्रियरघुबीरधीरमतिअति-
शय निजपरत्यागी। यद्यपिममअवगुणअपार संसारयोग्यरघु-
राया। तुलसिदासनिजगुणबिचारकरुणानिधानकरुदाया११८॥

टी०। हे हरिकौन यतनकरि आप सुखमानों काहेकि जैसे हाथी को दांत तैसीमेरी करणी अर्थात् खाने को और देखाइबेको और तैसे मैं जगतके देखायबे को तुम्हारे दासके आचरण करतहौं अन्तष्करण तें बिषयकेदास भयेहैं सो तुम सब प्रकार जानतहौ अर्थात् औरते छिपेहै पर अन्तर्य्यामीते कुटिलता कैसेछिपै पूर्वोक्त को दृढ़करत हैं जैसे कछु बचनते कहतहौ तैसीजोकरणीकरै तौ संसार समुद्रको गायके खुरबिषें जो जल तैसे बेप्रयास पार होजाय सो कथनी और करणी और तो आप के पदके सुखको कैसे पावें अब दृष्टांत दैकरि पुष्टकरतहैं देखबेमें सुन्दर है वेषजेह मयूर को नयन नाम पुच्छकी चन्द्रिका सोशुभनाम मंगलरूप मंगलकरबेको यहहेतुहै किभगवान

नाको मुकुटकरि मस्तक पर धारण करत भये तथा बोली अमृतते सनीकी नाईं पै विषयुत जो सर्पसोहै भोजन निठुरनाम कठोर ऐसो हृदय जाको कि नामो विषधरसर्प परिपाक होतहै तो करणीऐसी और बानो वैसी अर्थात् वेषवचन अतिसुन्दर हृदय अतिक्रूर तैसो मैं हौं तो कैसे आपको प्रियलगौं अवअपनी कर्तव्यतातें विपर्यय जेह करि जीव भगवत प्रिय होतहै सो कहैंहैं धीरमति जाकी अतिशय करि अपनीपराई बुद्धित्याग जेहको अर्थात् समबुद्धि ऐसे महान तुम को प्रियहैं हे रघुवर यद्यपि अपार औगुणके पात्र संसार के योग्य हमहैं तथापि तुलसिदासके ऊपर अपनोगुण विचारिकरि हे करुणा निधान कृपा करो ॥ ११८॥

मू०। हे हरिकवनयतनभ्रमभागे। देखतसुनतविचारत यहमननिज सुभावनहिंत्यागे ॥भक्तिज्ञान वैराग्य सकल साधन यहि लागि उपाई। कोउभलकहउदेउ कछु कोऊ असिवासना हृदयतें न जाई। जेहिनिशिसकलजीवसूतहिंतवकृपापात्रजनजागे। निज करणी विपरीति देखिमोहिं समुझिमहा भयलागे। यद्यपिभ- ग्नमनोरथ विधिवशसुख इच्छितदुखपावे चित्रकारी करहीन यथास्वारथ बिनचित्र बनावे। हृषीकेश सुनिनाउं जाउंबलि अतिभरोसजियमोरे। तुलसिदास इन्द्रीसम्भव दुखहरेबनिहिं प्रभुतोरे ॥ ११९॥

टी०। चेत आपकहो कि कछु साधन करै तबसंसार कौभ्रमछूटैगा सो हेहरि कौन यतनकरि भ्रमदूरहोय काहेकि देखतहौं कि जगत नश्वर है तथा सज्जन शास्त्र करि सुनतहौं जीमें बिचारत भी हौं तथापि यहमन अपनो स्वभावनाम विषयमो रुचिअरु चंचलतानहीं छोड़ै है साधनकरि सुखीहोनो सो मुख्य जो ज्ञानादि सकल साधन सोयह निमित्त उपायभये कि जगतमेको कछू देवै जो लेवै कोलोभ छूटैभी तौजगत मोकोंभलो कहै ऐसी व्यर्थकामना उठत है अर्थात् जोकछू प्राप्तभयो तौवाकरि विषयभोग होतहै भलो कहायबेमोंतो सोऊ नहीं केवल मूर्खतामिलैहै तद्यपि ऐसीबासना हृदयतें नजाति है अर्थात जेहज्ञानादि साधनकरि महात्मन्हको आपमिलतहो तेह करि हम ऐसे मंदजीवन्ह कों यह मनकेरिंदगीतें तुच्छ संसार की कामना सोऊनहीं पूर्णहोत आपके मिलबेको कौन प्रतीतिहै जेह- रातिको सकल जीव सोवतहैं आप के कृपा पात्रजन जागेहैं अर्थात्

अविद्यारूप जलीके आवरणमो जो सजीवहैं सोसोये सद्गभये भक्त सब तेहआचरणको दूरकरि विद्याको ग्रहणकियेहैं सोई जगेहैं सो अपनी करणी उलटी देखत हौं ताकों समुझि करि मोकों महाभय लगत है अर्थात् जागेतें बिपर्य्यय मैंहूं सोयो हौ तथापि विषयसम्बन्धीजो नानामनोरथ सो ब्रह्माके आधीन भान होत है सुखकी इच्छा करत दुखपावत है अर्थात् भाग्यमें लिखे नहीं तौ मनोरथ कियेतें कैसे मिले तथापि ऐसेमन्दहैंकि जैसे चित्रगर पूर्व्व चित्र बनावतरह्यौ मध्यमैं रोगादिकरि हाथनष्ट होने से स्वारथ व्यतिरेक चित्र बनाये अर्थात् हाथरहते चित्र बनावतरहै तौ वा चित्रकरि जीविका सिद्धहोति रही हाथगयेपर पूर्वको जो अभ्यास तेहतें मनकोचित्रबनावतहै तोवातें कौनस्वारथ होय तैसे भाग्य बिषै ब्रह्मानेलिख्यौ नहीं तो मनोरथ कियेतें कौन सिद्धहोय यद्यपि मैं सबप्रकारकरि भाग्यहीन नरकरूपहौं तथापि हृषीक जो इन्द्रीताके ईश जो स्वामी सो आपकोनाम सुनिकरि बलिहारी जातहौंअति भरोस जियमोहोतहै कि तुलसिदास को द्वन्द्वन्ह करि उत्पन्न जो संसार रूप दुःख सो हे प्रभु अपनी कृपालुताकरि तुमको हरणकियेही बनेगो॥ ११९॥

मू०। हेहरिकसनहरहुभ्रमभारी। यद्यपिम्रृषासत्यभासेजबलगिनहिं
कृपातुम्हारी।अर्थअविद्यमानजानियसंसृतिनहिंजाइगुसांई। बि-
नबांधेनिजहठशठपरबसपरयोकीरकीनाईं। सपनेव्याधिबिबिधि
बाधाजनुमृत्युउपस्थितआई। बैद्यअनेकउपाइकरहिंजागेबिनु
पीर न जाई।श्रुतिगुरुसाधुस्मृतिसंमतयहदृश्यसदादुखकारी।
तेहिबिनतजेभजे बिनरघुपति बिपतिसकैकोटारी। बहु उपाय
संसारतरणकहंबिमलगिरा श्रुतिगावै। तुलसिदासमैंमोरगये
बिनु जियसुख कबहुं नपावै॥ १२०॥

टी०। भगवत् अनुग्रह व्यतिरेक संसार दुःखनहीं छूटेहै देहादि जो मिथ्या तामें सत्य बुद्धि होनी यही संसारहै अर्थ जो विषय सो अविद्यमान नाम झूठ जानतहौ तथापि संसृति नाम क्लेशनहीं जाय है हे गोसांई बांधे बिना अपने हठकरिके शठ जो जीव सो परबस पर्यौहै सूगाकीनाईं अर्थात् जितनी इन्द्री मन बुद्ध्यादि सो विषय सब जड़ चेतन कों कैसे बांधेगो केवल अपनी मूर्खता यह जीवतेह विषयादि विषै ममतारूप हठकरि परबस भयोहै तामें दृष्टान्तदेत हैं जैसे सूगा ललनी पर बैठत है जब ललनी घूम्यौ तब वाकों चोंच

आ चंगुल तें पकड़िलेत है अपनो बन्धन मानिकरि तैसे ललनीरूप जो विषय वाको प्रवाह सो घूमतो भयो हम रूप चोंच हमाररूप चंगुल यहरीतिकरि बन्धनभयोसपने मे।व्याधिकरि विविधि प्रकार को बाधा नाम पीड़ाभई तेहकरि जैसे म्हत्यु उपस्थित नाम निकट आई वैद्य अनेक उपायकरे हैं पर लागे बिन पीर नहीं जात तहां संदेह होतहै कि जब स्वप्नमे व्याधिकरि पीड़ाभई तब औषधिकरि दुःख क्यों न जाय है ताको यह अभिप्राय है कि स्वप्न अवस्था विषै निश्चय कों अभावहै यह हेतु कहेकिजागे व्यतिरेक निर्मल क्लेशनहीं जात यहां पूर्ण अंग तें समता कोऊ कोऊ दृष्टान्त मे होतहै सर्वथा दृष्टान्त एक देश ग्रहणहै सो इहां केवल मिथ्या कथन मे एक देश दृष्टान्तको तात्पर्यहै वेदआदिके सम्मतकरि यह दृश्य जोसंसार सर्वदा दुखकारी ताको त्यागकिये व्यतिरेक रघुवरके भजे बिना बिपत्ति को टारिसकै है अर्थात् संसारमे मिथ्या दृष्टि तथा भगवत भजन जीवके कल्याणको यही दो उपाय हैं संसार को स्वरूप मैं मोरनाम हमार इतनोई है शब्दार्थ स्पष्ट है॥ १२०॥

मू०। हेहरियह भ्रमकीअधिकाई। देखतसुनतकहत समुझतसंशय सन्देहनजाई।जोजगम्हषातापत्रयअनुभवहोहिकहहुकेहिलेखे। कहिनजाइम्हगबारिसत्यभ्रमतेदुखहोइविशेषे।सुभगसेजसोवत सपनेज्योंवारिधिबूड़त अतिभयलागै। कोटिकुनावनपारपावसो जबलगि आपनजागै। अनविचाररमणीय सदासंसार भयंकर भारी। समसन्तोषदयाबिबेकतें व्यवहारीसुखकारी। तुलसिदाससबबिधिप्रपंचजगयदपिझूठश्रुतिगावै। रघुपतिभक्तिसन्त संगतिबिनुकोभवत्रासनसावै॥ १२१॥

टी०। भ्रमकी प्रबलता कहे संदेहकरतहैंकि ज्यौ जगत झूठ तो तापत्रयको अनुभवकेहिलेखे होतहै सो दूसरे तुकते समाधान करत हैं कि अनिर्वचनीयहै पर दृष्टान्तकरि देखनोकि म्हगतृष्णामे तीनों काल जलनहीं पर जेहि जीवको सत्यको भ्रमहोतहै तेहको विशेष करि दुखहोवेहै यह प्रत्यक्षहै तैसे झूठजो संसार तेहतें अज्ञानी जीव को तापत्रयको अनुभव होतहै यह भावहै झूठतें भयहै।वैसो दूसरो दृष्टान्तदेत हैं इहां भी स्वप्न अवस्थाविषें निश्चय के अभावतें नाव के प्राप्त भये पारहोबे को निश्चय प्रतीत नहीं होत तेहतें निर्मल दुख नहीं जात यावत् विचार नहीं तावत् सर्वदा भारी भयंकररूप जो

संसार सो रमणीय भासत है सोऊ भयंकर संसारको व्यवहार सम
सन्तोष दया विवेकतें सुखकारी होतो है अर्थात् समता आदि गुणकरि
संसारको स्वरूप जानिपरत है तब नहीं बंधनकरि सकत संसारके नाश-
होवेको मुख्य उपाय भगवति भक्ति तथा सत्संग सिद्धांत किये ॥ १२१ ॥

मू०। मैं हरिसाधनकरे न जानी । जस आमय भेषज न कीन्ह तस दोष
कहा बरबानी । सपने नृप कहं घटै विप्रबध विकल फिरै अघलागै ।
बाजिमेध शतकोटि करै नहिं शुद्ध होइ बिनु जागै । खगमहं सर्प
बिपुलभयदायक प्रगट होइ अबिचारै । बहु आयुध धरि बल
अनेककरि हारहि मरइ न मारै । निजभ्रमतें रबिकर संभव सागर
अतिभय उपजावै । अवगाहत बोहित नौका चढ़ि कबहूं पार
नपावै । तुलसिदास जग आपसहित जबलगि निर्मूल न जाई ।
तबलगि कोटिकल्प उपाय करि मरिय तरिय नहिं भाई ॥ १२२ ॥

टी०। पूर्व पदन्ह मो अनेक बार कहे जो शास्त्र के उपदेश को सुने
समुझे विचारे पर संसार नहीं जात तो चेत ऐसो सन्देह होय कि
शास्त्रने यथार्थ नहीं कह्यो है तेहि हेतुतें संसार नहीं छूटत यह सन्देह
को दूर करत हैं कि हे हरि हम साधन करिबो न जाने जैसे कछु आमय
नाम रोग तैसो औषधि न किये अर्थात् रोग और औषधि और तो
ऐठ बानी जो शास्त्र ताको कह दोष देय स्वप्नविषै ब्रह्महत्या लगी ताके
छूटबेको कोटिन्ह अश्वमेध कियो पर जागे बितरेक अति शुद्ध नहीं
होत अर्थात् स्वप्नविषै निश्चय के अभाव करि ब्रह्महत्या छूटबे को निश्चय
प्रतीत भई तो कैसे शुद्ध होय और जागे पर यह निश्चय भयो कि हत्या
लगिये नहीं तौ अशुद्धता कहां ते होय अर्थात् अशुद्ध शुद्ध होवे सो
अपनी प्रतीति एक कारण है ताको यह दृष्टान्त है कि जैसे बिदेस पूत रह्यो
घर मो अशौच होत है तौ नहीं सुनते अशौच नहीं लागत अरु शास्त्र भी
वाको नहीं लगावत है औ अशौच के मध्य में निकट रहे अरु जाने तौ अ-
शौच की प्रतीति होय है अरु शास्त्र भी अशौच विहित कर्म करबे को आ-
ज्ञा करत है तद्वत् पूर्व कहे जो अर्थ ताको दूसरो दृष्टान्त दै करि पुष्ट करत
हैं खग जो फूलके माला तेहि विषें बड़ो भय देनेवालो सर्प विचार नहीं
किये तें प्रकट होय ताको बहुत हथियार धरि अनेक बल करि मारते २
हारि गये पर मरै न अर्थात् सांप है नहीं केवल अपने प्रतीति करि २
सांप प्रकट भयो फेर यद्यपि अनेक बल करि मारत भये पर जब सांप नहीं
तौ मरै कौन यहू दृष्टान्तें प्रतीति कै अपने दुख सुख सो मुख्य हेतु

कहे अपनेभ्रमतें सूर्य के किरण करि उत्पन्न जो समुद्र सो अतिभय करतभये। तेहविषै मनहींकरि अवगाहत नामप्रवेशकरतभये तथा बोहितजो जहाज नौकाजोनाव मनकततताको ऊपरचढ़िकरिघूमतभये परकबहूंपारनपावैगो अर्थात् म्रगतृष्णाके समुद्रको पारनहीं तोपार कैसेमिले फेरकाहूके कहेतें अथवाअपने मनकरिऐसीप्रतीतिहोय कि यहझूठहै केवल भ्रमकरि सत्य भासत रह्यौतब काहेको पार होवेके निमित्तयत्नकरैगो पूर्व तीनदृष्टान्तकरि मिथ्याभ्रमतें दुख होनो कह्यो अब जबतक दृष्टान्तिक को स्वरूपकहत हैं तुलसिदास कीआपदाहित जो जगत सो निर्मूल न जायगो तबतक कोटिन्ह कल्प पर्यन्त उपाय करतेमरो पर संसारको पार न होयगो रेभाईजिज्ञासूको सम्बोधन है अर्थात् जैसे अज्ञानकरि ब्रह्महत्या लगी माला को सर्प प्रकट भयो म्रगतृष्णा को समुद्र खड़ो भयो सो जेह भ्रमकरि यहसब उदय भये सो भ्रम जब गयो तो वेसब आपैनाशको प्राप्तभये यावत् भ्रमरह्यो तावत् कितने उपायकिये पर वहमिथ्या समुद्रादि बनेरहे तैसेमिथ्या जो जगतरूप शरीरादि ताको अधिष्ठान जो आप नाम आहिं बुद्धि तेहकरि शरीरविषै यावत् सत्यताकी प्रतीति है तावत् अनेक उपाय करि निर्मूल न होयगो अर्थात् वस्तुहोय तौ उपायकियेतें जाय जो पदार्थहै नहीं सोजायकैसे फेर सो जोमिथ्यारूप संसारताको अधिष्ठान जो अहंबुद्धि तेहविषें यह बिचार भयो कि हम केवल अज्ञान करि बस्तुमानेरहे यह कछु पदार्थहै नहीं अर्थात् जब ऐसोबिचार दृढ़भयो तब सन्सार जो देहादि तथा ताको अधिष्ठान अहंबुद्धिरूप जो जीवताको लयभयोनामपरमेश्वरतें अतिरिक्तयह कछुवस्तु नहीं है तब परमेश्वर रहिगये यह औषधि करि सन्सारूप रोग निर्मूल जात है अन्यथा नहीं यह अर्थ है ॥ १२२ ॥

मू०। असकछु समुझि परैरघुराया। बिनतव कृपादयाल दासहित मोहनछूटैमाया। वाक्यज्ञानअत्यन्तनिपुणभवपारनपावैकोई। निशिगृहमध्यदीपकीबातिन्हतमनिवृत्तनहिंहोई। जैसेकोउएक दीनदुखितअतिअसन हीनदुखपावै। चित्रकल्पतरु कामधेनु गृहलिखै न विपति नसावै। षटरसबहुप्रकार भोजनकोउदिन अरुरैन बखानै। बिनबोले संतोषजनितसुखखाइसोइपैजानै। जबलगि नहिंनिजहृदि प्रकाश अरु विषय आशमनमाहीं। तुलसिदासतबलगिजगजोनि भ्रमतसपनेहुंसुखनाहीं ॥१२३॥

टी०। पूर्वपदविषै संसारको जो अपनोभ्रमकहैं सोभगवत्अनुग्रह व्यतिरेकनहीं छूटैहै यहजनाये दयाल अरुदास हित दोनों संबोधन वाक्य ज्ञान नाम तत्वमस्यादि जोद्वादस महा वाक्य ताके अर्थ ज्ञान विषे अत्यन्त निपुण भयेहू संसार को पार कोऊ नहीं पावत है अर्थात् अन्तष्करण विषनिष्ठा नहीं केवल महा वाक्य ज्ञानकरि परमेश्वर के सुख को भोक्ता कैसे होय तामें दृष्टान्त देत हैं कि रात्रि विषै गृहके मध्य अँधेरे में बैठौ है तो बातन्ह कें दिया करि अन्धकार निवृत्ति नहीं होत अर्थात् रात्रि सदृश अविद्या गृहतुल्य देहाभिमान अँधेरे सम अज्ञान याके आवरणमें प्राप्तहैं तौ दृत्ति होन तथा दयारहित केवलवाक्य ज्ञानकी निपुणता सोई बातन्हको दिया भयो तिन्हिते अँधेरो रूप संसार कैसेजाय दूसरादृष्टान्त देत हैं जैसे कोऊ एकअसन नाम भोजन हीन दुखपावैहै दीन दसा कों प्राप्तहोकरि अतिदुखितभयोहै सो चित्रको कल्पवृक्ष अरु कामधेनु अनेकन्ह गृहविषैं लिखपर दरिद्रतारूप विपत्ति को नाशनहीं होत तैसें निष्ठा हीन केवलवाक्य ज्ञानकरि सुखी नहीं होत षटरस जोकटु मधुरादि तामें बहुप्रकारको जो भोजन सोऊ दिन औरराचिवचनतें कहतहैं खायोनहीं अरु एकनेवाको खायो सो बिनबोले नामनहींभी बोलै है पर सन्तोष तें उत्पन्न जो सुख ताको सोई जाने है अर्थात् भरतादि नहीं बोलत रहे पर परमेश्वर के स्वरूप प्राप्ति सुखके भोक्ता रहे अरु रावणादि बेदको विभागकरता परतेह को तौन सुखको लेसऊनहीं यावत् अपने हृदयविषै परमेश्वरके स्वरूपको प्रकाश नहीं अरु विषय की आसासनविषै है तावत् तुलसीदास कहतहैं कि जगतयोनि में भ्रमत स्वप्नहमें यह जीवको सुखनहीं॥ १२३॥

मू०। जौनिजमनपरिहरैविकारा। तौकतद्वैतजनितसंसृतदुखसंशय सोकअपारा। शत्रुमित्रमध्यस्थ तीनियेमनहिं कीन्हे बरिआई। त्यागबगहबउपेक्षनीयअहिहाटकतृणकीनांई। असनबसनपशु बस्तुविविधिविधिसबमनमेंहरहजैसे। स्वर्गनर्कचरअचार लोक बहुबसतमध्यमनतैसे। बिटपमध्यपुत्रिकासूत्रमहंकंचुकबिनहिं बनाये। मनमहंतथालीननानातनप्रकटतअवसरपाये। रघुपति भक्तिबारिछालितचितबिनुप्रयास नहिंसूझै। तुलसिदास कह चिदविलासजगबूझतबूझतबूझै॥ १२४॥

टी०। संसार तें बंधन अरु मुक्त होतो दोऊ को हेतु मन है सो

देखावत हैं कि जो अपनो मन बिकार नाम संकल्प विकल्प रूप चांचल्य छोड़े तो द्वैत जो देहादिविषै सत्यबुद्धि तेहतें उत्पन्न संसृत जो संसाररूप दुःखतथा संशयजोनिश्चयकोअभाव शोकनाम मेरे।मरण होयगो नरक पड़ेंगे यहसब जो अपार दुःख सोकात नाम कहां है अर्थात् मनके स्थिर भये द्वैत बुद्धिये नहीं होत है द्वैत को कार्य जो संसार रूप दुःख सो कहांतें होय मन की कर्तव्यता को देखावत हैं शत्रु जो अपकारकरै मित्र नाम उपकारी मध्यस्थजाको दोऊ भाव नहीं यह तीनों को बरिआई नाम हठकरि मन कियो है तहांशत्रु को त्यागमित्रको ग्रहण तथा मध्यस्थ जो उपेक्षणीय नाम न त्यागन ग्रहण जैसे सर्प का त्याग सोना का ग्रहणतृणको उपेक्षा नाम उदासीनता अर्थात् मनके वेगमो यह भावत्याग ग्रहणादि होत है जो मनस्थिर एक जवाहिर करि हजारन्ह द्रव्य मिलत है तेहकरि जो वस्तु चाहे सो मिले तैसे स्वर्ग नर्क जड़ चेतन लोक बहुत नाम ब्रह्म लोकादि सबमनके मध्यमो बसत हैं अर्थात् जैसी बासना करत है तैसी तैसी कर्म मो प्रवृत्ति होत है तेह तेह कर्म करि स्वर्गादि की प्राप्ति होतिहै पूर्व सिद्धान्त के पुष्ट करबे को तीसरो दृष्टान्त देत हैं चेत ऐसो संदेह होयकि एक मनतें अनेक पदार्थ कैसे भये तेहपर कहत हैं कि जैसे वृक्षके मध्यमो अनेक पुतरी तथा छतमो कंचुक नाम वस्त्रविहीन बनाये नाम बनाये के पहले भी है काहे कि वामो न होय तौ आयो कहांतें तैसे नाना प्रकार को शरीरमनके विषय लीन रहत है औसरपाय प्रकट होतहै अर्थात् जब जैसो काल जब जौने गुणको उदय तबतें सोई देवतिर्य्यगादि शरीर जीवको यहमन बनाय देत है यह पूर्वोक्त बिचार कैसे जानि परे तेहपर कहत हैं कि श्री रघुबर की भक्तिरूपी जलकरि क्षालित नाम धोयो जाय जब चित्त अर्थात् बासना रूपी मलदूर होय तब बिना परिश्रम सूझै है तुलसीदास कहत हैं कि चैतन्य को बिलास जो जगत बूझत बूझत बूझै है इहांतीनबार बूझत पददिये ताको यह अभिप्रायहै किप्रथम शरीर को मिथ्या बूझै तब पिण्ड ब्रह्माण्ड के एक रचना करि समस्त ब्रह्माण्डको मिथ्या बूझै पश्चात् मनके संकल्प बिकल्प करि जोनाना बासना ताको त्यागकरि निष्काम एकरस निष्ठामो स्थित रहिमनके स्वरूपको नाशकियो तब बूझैगो/यह अर्थ है यहां प्रथम चित्तनाम चैतन्य रूपजीवसो बिनाश रहित है अर्थात् अपनो स्वरूप जैसो है

तैसो बूझो तेहके पश्चात् विलासरूप जगत् नाम माया अर्थात् जगत् को विलास सोई माया है यह रीतितें मायाको स्वरूप बूझो तदनन्तर परमेश्वर को बूझे अर्थात् अपनो अरु माया को स्वरूप बूझिकरि तब परमेश्वर को बूझो परमेश्वर के बूझे तें आपनो जीवरूप तथा जगत विलास रूप जो माया सो मिटकरि केवल परमेश्वर रहिगये तब जाने जो हम बूझो यहां वेदकर्म काण्ड उपासना काण्ड ज्ञान काण्ड यह त्रिकांड प्रतिपादन करत हैं तेहके निमित्त तीन सामग्री हैं स्थूल शरीर तेहमो पर्यवसान कर्मेन्द्री को है दूसरो लिंग शरीर सनात्मकतामो ज्ञानेन्द्री तथा मनबुद्धि चित्त अहंकार अन्तःकरणको पर्यवसान है अरु तीसरो चैतन्य जीवात्मा तहां वेद को हृदय ऐसो बूझो कि स्थूलशरीर तेंवेद विहित कर्म करनो अन्तष्करण रूप जो लिंग शरीर ज्ञानेन्द्री सहित तेहतें श्रवण कीर्तनादि भक्तिरूप उपासनाकरनो चैतन्य जो जीवात्मा सोपरमेश्वर तें अपने को अभेद ज्ञान करै तब जाने जो हम बूझौं यह भाव है॥ १२४॥

मू। मैंकेहिकहौंबिपतिअतिभारी। श्रीरघुबीरधीरहितकारी। मम
हृदयभवनप्रभुतोरा। तहंबसिआइबहुचोरा। अतिकठिनकरहिं
बरजोरा। मानहिंनहिंबिनयनिहोरा। तममोहलोभअहं-
कारा। मदक्रोधबोधरिपुमारा। अतिकरहिंउपद्रवनाथा।
मर्दहिंमोहिंजानिअनाथा। मैंएकअमितबटपारा। कोउसुनैन
मोरपुकारा। भागेहुनहिंनाथउबारा। रघुनायककरहुसंभारा।
कहतुलसिदासुनरामा। लूटहिंतसकरतवधामा॥ १२५॥

टी०। पूर्व कल्याणको विचार कहिकरि अब स्वामीतें प्रार्थना करतहैं हेश्रीरघुबीरहेधीर हेहितकारीमें अपनीभारी विपत्ति दूसरे केहतें कहौं अब विपत्ति कौं जनावत हैं कि मेरो हृदय है प्रभु घर तुम्हारो है तेह विषय बहुत चोर आयबसे हैं सो अति कठिन हैं बर जोरानाम जबरदस्ती करतहैं अर्थात् चोर गाफिली मो चोरी करत हैं यहचोर सब अपनी प्रबलता करि जागे पर भी ज्ञान बैराग्यादि ऐश्वर्यको लूटतहैं चेतकाडो किणो जयरहैं तौ प्रार्थनाकरि अपनेको बचाओ सो हेप्रभु यह सबमेरे बिनय निहोरा को नहीं मानत हैं अर्थात् सत्पात्र होंयतो बिनय कियेतेंमानैं यहअतिक्रूर स्वभावमो-को असमर्थ असहाय जानिलूटतहैं यहां विनयनिहोरा दोऊपददिये सोबचनकरि नम्रहोनो विनयहै हाथ जोड़नो पैरपड़नो यहनिहोरा

है अब चोरन्हको नामकहि जनावतहैं तमनाम अविद्याको आवरण बोधरिपु नाम अज्ञान मोहादिको अर्थपीछे लिखि आयेहैं यही सब चोर अति उपद्रव करतहैं नामनाना दुखदेतहैं अनाथ जानिमोको मर्दनकरतहैं चेत कहो कि अबरन्हतें काहै तौ हे प्रभु इस एकवट-पारबहुत कोऊ मेरे पुकारको सुनेत नहीं अर्थात् बटपारन्हकों प्रबल जानि सब डरतहैं किजौं हमसहायकरैं और यहदीनजीवको छोड़ हमहीं कौं लूटने लगें तो बड़ो अनर्थ होय चेतकहो कि भागिकरि अपनेकौं बचाओसो हेस्वामीभागेहू उबार नहीं अर्थात् जौने देशमो जाऊं तहां एसंगहीं रहतहैं यह बिचारिकरि हे रघुनायक सन्हार करो नामसहायकरो चेतकहो कितुम अतिकातरभये तेहतेंबारबार पुकारतहो सो नहीं तुलसीदास कहत हैं कि सुनो हे श्री रामजू तस्करनामचोर सबतुम्हारोगृह लूटतहैंअर्थात्सर्वभूतकीहृदयतुम्हारो मन्दिरहै आपवामों टिकतहो चेतकहो किघरमेरोलूटा जातहै तुम बारबार काहेकों पुकारतहो सोसुनोमोकों यहअपार चिन्ता होति है कि तुम्हारो अपयश जगतविषें न होय अर्थात् जगतयह कहैगो कि त्रैलोक्यनाथ जोश्रीरामजू तांकोमहल चोरन्हने लूटलियो पररामजूतें कछु प्रभुता नहींआई यहबड़ो दुर्यश होयगो तेहचिन्तातें बारबार पुकार करत हौं सेवकको धर्महै कि स्वामी को अयश न होय ऐसो कार्यकरै सोमेरीशक्ति आपतें जनावने मात्रहै जैसीरुचि होइ सोकरौ यह अर्थ है ॥ १२५ ॥

मू० । चिन्तायहमोहिंअपार । अपयशनहिंहोयतुम्हार । मनमेरेसनहिंसिषमेरी । जौंनिजभक्तिचहहिंहरिकेरी । उरआनहिंप्रभुकृतहितजेते । सेवहिंतजेअपनपौचेते । दुखसुखअरु अपमान बड़ाई । सबसमलेखहिंबिपतिबिहाई । सुनुशठकालग्रसितएकदेही । जनितेहिलागिबिदूषहिंकेही।तुलसिदासबिनुअसिमति आये । मिलहिंनरामकपटलयलाये ॥ १२६ ॥

टी० । संसारतें बन्धनतथा मुक्तिदोऊको हेतुमनहै तेहमनको उप-देशकरत हैं रेमन मेरे शिक्षाको मानिले जौहरि की भक्तिचाहै है अर्थात् जौपरमेश्वरके प्राप्तहोवेकीरुचि होयतोमेरे कहेकोमान औ जौसंसार प्रवाहमो बहबे की प्रसन्नताहैतो जो करै है सोकरुअब शिक्षा कहतहैं हृदयबिषै प्रभुकेकिये हितजितने सो आनहिं नाम लैआउ अर्थात् मनुष्य शरीरदिये गर्भमो पालनकिये अरु ज्ञानदिये

ऐसेअनंत उपकार परमेश्वरकेहैंताकों स्मरण करि शरण होउतघूहोनो उचित नहीं तथातिनकी सेवनकरु जोअपनपौनाम अपने स्वरूपकों चेतेहै अर्थात् भगवत भक्तन्ह की सेवाकरु जेहके संगकरि भगवान मिलत हैं साधु संगकरि कौन गुण होत है सो देखावत हैं दुख सुखादिकों सम करि देखु तब बिपति बिहाई नाम छूटेगी अर्थात कोई प्रिय बस्तु के प्राप्तभये जो आनंद मानेगो तौ कालके बेगकरि प्रारब्धके प्रबलतातेंताके नाशभये रोवनो पड़ेगो तथा काहू के बड़ाई किये पै जो हर्ष होयगो तो सब जीवको एकबुद्धि नहीं अनेक जगह अपमानउ होयगो तहां २ शरीरान्तको शतुल्य विषादकरनो पड़ेगो यह बिचारकरि दोउसोसमबुद्धिनाम जब शरीरादि मिथ्या तौ तेहि शरीराभिमान करि जो दुख सुखादि सोकब सत्यहोयगो सतचित आनन्दस्वरूप जो मैं तेहते संसाररूप जो बिषम बुद्धि ताकौं संबंध तीनों काल मो नहीं है यह बिचारतें सम बुद्धि करनो तेह बुद्धि तें बिपत्ति को नाशहोतहै पहिले जितनी कर्तव्यता सुखकी ताकों फल रूप जो समता सो कहे अब निषेध सो जो मुख्य सो कहतहैं सुनरे शठकाल करि ग्रसित है यह देही नाम जीव तहां यद्यपि जीव को नाश नहीं तथापि जावत शरीरादि बिषैं अहंबुद्धि है तावत् आविर्भाव तिरोभाव रूप जो जन्ममरण सो जीवकों अवश्य होतहै यह हेतु करि देहीकोकाल ग्रसितकहे तो आपेंकालके मुखमो परौ है तेहके निमत्त कोहोनाम कोउजीवकों जनिदुखदे नाम कायिकशरीर कृत पीड़ावाचिक कठोर बचनादि करि जो दुख मानसिक औरकी हानि बिचारनो यह तीनि प्रकारकी हिंसा त्यागकरु अर्थात् समताकों ग्रहण करि हिंसा को त्याग करे तौ जीवन मुक्तहै फिरदूसरी कर्तव्यताको प्रयोजन नहीं है यह भाव है तुलसीदास कहत हैं कि रेमन ऐसी मति आये बिना कपट लयलाये नाम समता कौं ग्रहण हिंसाके त्यागबिन जितनोसाधन करेहैसोकापटकरि लयलावनोनाम चित्तलगावनोहै तेहतें श्रीरघुबरनहीं मिलते यह अर्थहै ॥ १२६ ॥

मू० । मैंजानीहरिपदरतिनाहीं । सपनेहुंनहिंबिरागमनमाहीं । जेरघुबीर चरणअनुरागे । तिनसबभोगरोगसमत्यागे।काम भुजंगडसतजबजाही । विषयनिम्बकटुलगत नताही । अस मंजसअसहृदयबिचारी ।बढ़तशोचनितनूतनभारी। जबकब रामकृपादुखजाई । तुलसिदासनहिंआनउपाई ॥ १२७ ॥

टी०। अबभगवत अनुरागहीनको लक्षणअपने द्वारकरिदेखावतहैं मैंने जानी कि मोकों भगवत चरण मों प्रीति नहींहै चेत कहोकि सेवा पूजा पाठ सब करतहौ प्रीति क्योंनहींहै तेह पर कहत हैं कि अबलौंमेरा मन विषै वैराग्य नहीं देखते अर्थात् अब संसारतें वैराग्य नहीं तौ भगवत अनुराग की प्रतीतिकैसे होय काहे किजौं मनदो होयतौ एकसंसारमों लगे एक परमेश्वरमों लगे सो हैं नहीं मन एकतौ एक ओर काहू लगो यह भाव है वैराग्यके पुष्टता निमित्त अब दूसरो लक्षण दिखावतहैं कि जेश्री रघुबीर चरण अनुरागी होतहैं ते सब संसारी भोगको रोगतुल्य दुखदाई बूझि त्याग करत हैं फेर वाहीभोगको अपनेमें दृढ़करत हैं कामना रूपी सर्प जब जाकों डसत नाम काटत है तब विषै रूपी नीबताकौं कटुनहीं लगत अर्थात् सांपके काटे पर विषके चढ़ेतें निंबादि जो कडुआवस्तुसो मुखमें दियेतें तीत नहींलगत तैसे कामना रूपविषके व्याप्तभयेतें संसारी जो इन्द्री संबंधीविषय सो दुखदाई नहींजानि परत ऐसो असमंजस हृदयविषैं विचार करि नित नवीनभारीशोच बढ़तहै अर्थात् विषै मो अपनी रुचि देखतहौं यहहेतु करि आपतें विमुखताकी प्रतीति होतिहै तेह तें शोच बढ़त है मन के प्रबलता करि अपने कर्तव्यता तें अपने कल्याणकी प्रतीतनहीं जबकब श्रीरामकृपा करि तुलसीदासको दुख जायगो आनउपाय नहीं यह निश्चय है॥ १२७॥

मू०। सुमिरुसनेहसहितसीतापति। रामचरणतजि नहिंनआन गति। जपतपतीरथ योगसमाधी। कलिमति बिकलनकछु निरुपाधी। करतहुसुकृत न पापसिराहीं। रक्तबीज जिमि बाढ़तजाहीं। हरणिएक अघअसुरजालिका। तुलसिदास प्रभुकृपाकालिका॥ १२८॥

टी० अपनेओरतें यथाशक्ति जीव कों परमेश्वरको भजन करने चाहिये भगवतकृपातौ बड़ेभाग्यतें होतिहै शब्दार्थसुगमहै अन्य साधनजपादि औरयुगनमों जीवकोकृतार्थ कियेपर कलिविषै मति की व्याकुलताकरि दूसरोकछूउपायउपाधिरहितसिद्धनहींहो केवल श्रीराम भजनकरिजीवकोकल्याणहै चेतकहो कि पुण्यकर्म पापकी निवृत्ति होयगी सोनहीं पुण्य करतहू पाप न सिरात नाम समाप्त नहीं होत यामों दृष्टान्त देतहैं कि रक्तबीजसमा

बढ़तजाय हैं अर्थात् रक्तबीज राक्षस रह्यो सो वरदानके प्रभाव करि जब मारोजाय तब वाके शरीरतें जेबूंदरक्त पृथ्वीमो गिरें तेतनो रक्तबीज नवीन उत्पन्न होजांय तैसेपुरुषकरि पीछेको कियो पाप नाशभयो आगेदुगुनो कियो तो समाप्तकैसेहोय यहभाव है जैसे समस्त असुरके जालिकानाम समूहताकों एकजो कालिका हरण नाम नाश करतिभई तैसें तुलसीदासके पापरूप जोअसुर समूह ताकों प्रभुकी कृपारूप कालिका जो नाशकरै तौ नाशहोय यह निश्चय है १२८ ॥

मू०। रुचिररसनातूंरामरामरामक्यौंनरटत। सुमिरतसुखसुकृत बढ़तअघअमंगलघटत। बिनुश्रमकलिकलुषजालकटुकराल कटत। दिनकरकेउदयजैसेतिमिरतोमफटत। योगयागजप बिरागतपसुतीर्थअटत। बांधिबेकौंभवगयंदरेनुकीरजु बटत। परिहरिसुरमणिसुनामगुञ्जालखिलटत। लालचलघुतेरो लखितुलसीतोहिहटत ॥ १२९ ॥

टी०। उपदेश करतहैं रसनाहनाम जिह्वातें रामनाम जपेतें कहा होयगो तेहअपेक्षासो फलकहै तथा रामनामके प्रभावको दृष्टान्त देकरि दृढ़करत हैं तिमिर तोमनाम अन्धकार को समूह सुन्दर तीर्थमो अटत नाम फिरत संसार रूप हाथी के बांधबेकौं धूलीकी जेवरीवटतनाम बरत हैं अर्थात् जोसाधन सो कलिकाल के प्रभावकरि संसारके छोड़ाइबेमें धूलीकी जेवरी सदृशमिथ्या ह्वैगये हैमन सुन्दर रामनाम रूप चिन्तामणि छोड़ करि गुंजा जो करिजनी ताकों देखिकरि लटक नाम लोभ करत है अर्थात् वांछित फल देबेकों जैसे चिन्तामणि तैसे संसार के छोड़ाइबेकों तथा परमेश्वर पदप्राप्त करबेकों नामहै विशेषतें कलिकालविषें ताकों छोड़ि घुंघुची सदृश जो अन्यसाधन तेहिविषै लोभ करत है यह लघुनाम तुच्छ लालच तेरो देखिकरि तुलसी ताकों हटत नामहटावतहै अर्थात् अन्यसाधनकी आशाछोड़ि रामनाम विषै प्रीति करु यह शिक्षा करत हैं ॥ १२९ ॥

मू०। रामरामरामरामरामरामजपत। मंगलमुदउदितहोत कलिमलछलछपत। कहुकेलहेफलरसालबबुरबीजबपत। हारहिंजनिजन्मजाइगालगूल गपत। कालकर्मगुण सुभाव सबकेशीशतपत। रामनामंमहिमाकीचरचोचलैं चपत।

साधनबिनुसिद्धिसकलबिकललोगलपत। कलियुगबरबनिज बिपुलनाम नगरखपत। नामसोंप्रतीति प्रीतिहृदय सुथिरथपत। पावनकियरावणरिपुतुलसिहूसेअपत ॥ १३० ॥

टी०। पूर्वोक्त उपदेशको दृढ़ करत हैं रूपतनाम दूर होत ऐसन कहतो बबूरके बीजकों बपतनाम बोवत रसाल जोआम ताके फलको का पावैहै अर्थात् आमके वृक्षसदृश रामनाम ताको फलरूप भगवत् प्राप्ति अन्यसाधन बहुकालमो बबूरके बीज तुल्यहै ऐसें बिचार करि जन्मकों जापनाम व्यर्थ जनिहारहि नाम मति खोवे गालगूल नाम गालमारि गुलकरनो गपत नाम गपमारते यह लोकोक्ति है अर्थात् व्यर्थ बार्ता करि दुर्लभ मनुष्य जन्मको नाशमति करु कालादि जो सो सबके नाम ब्रह्मादि कीट पर्य्यन्तके माथेको तपतनामताप करत है अर्थात् आधीनकरि दुखदेतहै पर रामनामके महिमाकी चरचा चलें चपतनाम दवत है अर्थात् रामनामके आश्रयीको दुख नहीं दै सकत साधनबिना सकल सिद्धिके निमित्त बिकल होकरि सबलोग लपतनामचाहत हैं अर्थात् कलिकाल बिषय निर्विघ्न साधनहोतनहीं तो सिद्धि कैसे मिलै अरु नाम को प्रभाव ऐसा है कि कलियुगको कर्तव्यता जो नाना बिधि निषेध सोई श्रेष्ठ बनिजनाम सौदा बिपुल नाम बहुत भयो सोनाम रूप नगर बिषय खपतनाम बिकिजात है अर्थात् बड़ेशहर मो भलाबुरा सबबस्तु बिकिजातहैं तैसेंनाम बलंब करि कलिकालकृ समाप्त होत है याको यहभाव भयोकिसौदाजब बिकै है तब बेचनेवालेको फल होतहै जैसे कलिकालमो जन्मजाको सोई व्यापारी भयो ताको कलियुगकी कर्तव्यतारूप जो सौदा सो नामरूप नगरबिषें बिकतहै भगवत पद प्राप्तिरूप फल बेचनेवालेको मिलतहै अति उत्तम फलकी प्राप्तिभई यही हेतुतें कलिकालकृ को श्रेठ बनिज रूप कहे यह अर्थ है प्रत्यक्ष प्रमाण देतहैं कि नाम सो प्रीतिप्रतीति हृदय के बिषें सुन्दर स्थिरकै स्थापित करत जो तुलसी ऐसे अपत नाम अपवित्र अर्थात् अशुद्ध पापरूप ताहू को रावणरिपु जो श्रीरामजू सो पवित्र किये ॥ १३० ॥

मू०। पावनप्रेमराम चरणकमल जन्मलाहुपर्म। रामनामलेत होत सुलभसकलधर्म। योगमखबिबेकबिरतिवेदबिदितकर्म। करि बेकहेकहे कठोर सुनतमधुरनर्म। तुलसी सुनिजानिबूझि भूलहिजनिमर्म। तेहप्रभुकोहू होहिजाहिसबहीकीशर्म ॥ १३१ ॥

टी०। रघुबर चरणकमल विषे पावन नामपवित्र अर्थात् निःकाम जो प्रेम सोई जन्म ग्रहण करबे को परम लाभ है तथा राम नाम के ग्रहण करते सकल जो धर्म सो सुलभ होत है अर्थात् यह जीवको कल्याण को यह दोनों उपाय मुख्य हैं राम नाम जपनो अरु चरण कमलविषे अन्तष्करण तें प्रीति करनो सर्व साधन तें श्रेष्ठ जनायबे के अर्थ परमपद दिये अर्थात् अन्यसाधन तें ऐश्वर्य्यादि की प्राप्ती सामान्य लाभहै और रामानुराग तथा नामावलम्ब यह मनुष्य जन्म को परम लाभ है नाम जेहके ऊपर दूसरो लाभ नहीं जेहतें रामजू बस होतहैं तथा नाम ग्रहण कियेतें सकल धर्म सुलभ होत है यह कहै ताको यह अभिप्राय है कि सर्व धर्म कर्म को फल परमेश्वर हैं सो नामावलम्ब किये तें प्राप्त होत हैं येत यह पूछे कि और सब साधन कैसेहैं तो सुनो योग यज्ञ बिबेक बैराग्य अवरउ जो वेदविषे विदित कर्म हैं सो करिबे को कटुनाम कडुआ अर्थात् दुखदाई कठोर नाम बड़े प्रयास अरु बड़ो ऐश्वर्य अन्य अनेक सहायकरि सिद्ध होत हैं सुनबे मो मधुर नाम स्वर्गको ऐश्वर्य्यादि फल होयगो नरम नाम कोमल अर्थात मीठे फल अरु योग यज्ञ सुनबे मो दो २ अक्षर अति कोमलपर कर्तव्यता अति कठिन तेहतें विपर्यय श्रीराम नाम सुनतउ कोमल अरु कर्तव्यता अति सुलभ तथा सर्व साधन को फलको दाता तुलसी कहतहैं कि पूर्वोक्त उपदेश को सुनि जानिबूझ करि भरमसो जनि भूल अर्थात् अनेक मार्ग ताको अनन्तफल शास्त्र कहत हैं तेहविषे लोभी मति हो तेह प्रभु को तू शरण हो जाको सबहीको नाम ब्रह्मा ते कीट पर्यन्त के निर्वाह को शर्मनाम लाज है अर्थात् जेह परमेश्वरके निबाहे तें सब निबहत है तथा सबको ऐश्वर्य्यादि जेहके कटाक्ष करि होतहै कटाक्ष के फिरे नाश होतहै ताके शरण होनो उचित है १३१ ॥

मू०। रामसेप्रीतमकीप्रीतिरहितजीवजायजियत। जेहिसुखमानि
लेतसुखसो रसुभ्रकियत। जहंतहंजेहियोनि जन्ममहिपताल
बियत। तहंतहंतूबिषयसुखहिचहतलहतनियत। कतबिमोह
लथ्योफथ्यो गगनमगनरियत। तुलसीप्रभुसुयशगाइक्योंनसुधा
पियत॥ १३२॥

टी०। राम ऐसे प्रीतम के प्रीति ते जो रहित भयो तौ सो जीव जायनाम व्यर्थ जियत है येत कहै कि नाना विषय भोगकरतहौं व्यर्थ

क्यों तेहपर कहत हैं कि जेहसुखको तैं सुख मानिलेतहै सो सुखको समुझ तो नियत नाम क्याहै अर्थात् कुछ वस्तु नहीं विषय सुखको तुच्छ देखावत हैं जहां २ जेह योनि विषे जन्म पृथ्वी पाताल वियत नाम आकाशलों तहां २ तू जौन विषय सुखकौ चाहयहै सो लहत नाम मिले है नियत नाम निश्चय करि अर्थात् जेह सुखको तू सुख मान्यौहै सो सूकर कूकरादि जो नर्क योनि तामें मिलतहै कत नाम काहे विमोह जो अज्ञान तेह करि लच्यौ नाम लुब्ध होकरि यहां लटिकरि नाम थकिकरि अर्थात् मृगतृष्णामें जलढूंढ़ते परिश्रममें फलहै फच्यौ जो आकाश ताको मगन नाम आनन्द होकरि सियतहै अर्थात् विषयको अवलंबकरि सुख प्राप्ति की वासना अति मूर्खताहै जैसे आकाश फच्यौ नहीं तैसे तीनों काल मों विषय कछु वस्तुहै नहीं तथा जैसे आकाशके सीवने की वासना तैसे विषय तें सुखकी चाहना यह समताहै सो तुलसी कहत हैं कि रे मूर्ख मन ऐसी जड़ता क्यौंकरैहै प्रभुको सुयश गायकरि अमृत क्योंनहीं पीवै अर्थात् अमृतके पानकरि अमरहोतहै तैसेयशरूप अमृत जन्ममरण कीनिवृत्ति करैहै ताको गानरूप पानकरु यह भाव है ॥ १३२ ॥

मू०। तोसेहौंफिरिफिरिहितप्रियपुनीतसत्यबचनकहत। सुनिमन गुनिसमुझिक्योंन सुगमसुमगगहत। छोटो बड़ो खोटो खरो जगजोजहांरहत। अपनेअपनेकोभलोकछुसोंको जो न चहत। विधिलगिलघुकीटअवधिसुख सुखीदुखदहत। पसुलौंपसुपाल ईशबांधतछोरतनहत। विषयमुदनिहारभारशिरकांकांधेज्यौं वहत। यौंहीजियजानि मानिशठतूसासतिसहत। पायोकेहि घृतविचारुहरिणवारिमहत। तुलसीतकुताहि शरणजातेसब लहत ॥ १३३ ॥

टी०। रेजीव तोसों हम फेर २ हित अरु प्रियनाम जामें दुख नहीं पुनीत नाम सर्व दोष रहित तथा सत्य बचन कहत हौं सुनि करि मनमें गुनि समुझि करि काहे नहीं सुगम सुन्दर मार्ग कौं ग्रहण करत है ईश्वराधीन सब है सो हेतु दै करि जनावत हैं छोटो जो पशु पक्ष्यादि बड़ो जो ब्रह्मादि खोटो जो पाप कर्त्ता खरो जो पुण्यकर्त्ता जगत्विषैं जो जहां रहतनाम स्थितहै सो अपनोको नाम अपनो आश्रयी जो परिवार संबन्धी ताको अरु अपनो भलो कछु तोसौं को जो न चाहत है अर्थात् सुखकौं तथा अपने हित वर्ग के

भले कौं सब इच्छा करत हैं पर बड़े ब्रह्मा पर्यन्त तथा लघुता की अवधि कीट सों सब सुखतें सुखी होत हैं दुखतें जलत हैं अर्थात् एकरस सुख काहूको नहीं रहत यद्यपि दुखको इच्छा नहीं करत तथापि कालपाय जैसें सुखआवतहै तैसें दुखऊ भोग होत है यह हेतुतें कोऊ स्वतंत्र नहीं है पशुलौंनाम पशूको जैसें पशुपालनाम ताको स्वामी बांधतहै छोरतहै नहतनाम हरविषें नाधतहै तैसें ईशनाम ईश्वर ब्रह्मातें कीटपर्यन्त जीवकों जगतरूप क्रीड़ाकेअर्थ विमुखन्हकों बांधतहै सन्मुखकों छोरतहै तथा जाकों जो अधिकार तवने व्यापारमो लगावत है यहभाव है पूर्व सबकों परतंत्र कहि अब संसार सुखको तुच्छ कहत हैं कि विषय भोग करि मुदनाम जो आनन्द सो निहारनाम देखकैसोहै कि जैसेंसिरको भारनाम बोझा कांधेकेऊपर वहत नाम धारण किये अर्थात् सिरके ऊपर जो बोझालेत है ताको सिरजब अतिदुखत है तब बोझाकौ कांधे पर धरत है तेहितें किञ्चित् सावकाश पाय सुखहोत है अर्थात् बोझा गयो नहीं हेरफेरकरि किञ्चित् सुख की प्रतीत भई तैसे जाही इन्द्रिन्ह करि दुखभोग्यो वाहीकरि विषयभोगके प्राप्तिभये किञ्चित् तुच्छसुख की प्रतीति होतिहै जैसे कांधे को बोझा सिर पर फेर सिरको बोझा कांधेपर आवेगो तैसें दुख के आगे सुख सुखके आगे दुख एक न छूटैगो यौंहीं जियमो जानि मानिनाम प्रतीतिकरि रेशठतुलसीसहत नाम कलेशसहतहै विचारकरुहारिणा बारि जो म्रगतृष्णा ताको मइतनाम मथनकरत घृतके हनेपायो है अर्थात् सत्य जो जलताहूके मथनकरि घी नहीं मिलै है म्रग, तृष्णामो तो सर्वथा जलहै नहीं ताके मथनकरि कब घी मिलैगो तैसें विषय म्रगतृष्णा तुल्य सर्वदाझूठहै ताको भोगरूप जो मथन तेहतें सुखरूप घृत तीनकाल मिलनेवालो नहीं केवल अज्ञान करि म्रगतृष्णारूप विषय तें सुखहोबेकी प्रतीतहै यहहेतु तुलसी कहतहै कि ताके शरणको तकुनामदेखु जातेंनाम जेहि परमेश्वर तें सब लहत् नाम सबको सब प्राप्त होत है अर्थात् ब्रह्मातें कीट पर्यन्त सब को अपनो २ अधिकार यथा ऐश्वर्य मिलत है तेहि स्वामीके शरण व्यतिरेक जीव को तीनिकाल सुख नहीं यह सर्व सिद्धान्त है ॥ १३२ ॥

मू०। तातें होंबरबारदेवद्वारपरिपुकारकरत। आरतिनतदीन॰

ताकहँ प्रभु संकट हरत। सो। कृपालु सो। कविकलर।बगाडरडरत। का।सुनिसकुचेकृपालनरशरीरधरत। कौशिकमुनितीयजनक शोचअनलजरत। साधनकेहिशीतलभयेसो।नसमुझिपरत। केवटखगसवरिसहजचरणकमलनरत। सन्मुखतोहिहोत न।थकुतरसुफलफलत। बंधुवैरकपिविभीषणगुरगलानिग- रत। सेवाकेहिरीझिराम कियेसरिसभरत सेवकभयोपव- नपूतसाहिबअनुहरत। ताकोलियेरामनामसबकोसुढरढरा- त। जानेबिनुरामरीतिपचिपचिजगमरत। परिहरिछल शरणगयेतुलसिहुसेतरत॥ १३४॥

टी०। जोकोउ विनयकरत है ताको एकबार दो बार कहनो उचितहै सो मैं यह हेतुतें बारबार हेदेव आपके दरवाजेपरपरि करि पुकारकरत हैं। कि नतजो नमितभयो ताको आरति नाम पीड़ा अरु दीनता तथा नानासंकट कहे मात्रतें सुन्दर प्रभु जो आपसो हरतहो अर्थात् केवल प्रणाम मात्रकियेतें सेवा व्यतिरेक समस्त क्लेश दूरकरत हो।यह स्वभाव तथा ऐश्वर्य दूसरेको नहीं यह हेतुतें यद्यपि आप नहीं सुनते तथापि बारबार प्रार्थनाकरत हौं विनय मात्रतें काको दुखछोड़ाये सो प्रमाण दैकरिकहतहैं लोक पाल जो इन्द्रादि सो शोकतें व्याकुल होकरि रावणके डरतेंडरते भये अपनो कलेश सुनाये सो सुनिकरि हे कृपालु मनुष्य शरीर धारणकर ताको आपसकुचे किन्तु नहीं काकुहै अर्थात् ईश्वरसर्व ब्रह्माण्डको स्वामीपिता ताको राजपुत्र होनो यह अतिहीनताहै तथापि देवतन्हके दुख छोड़ायवे के अर्थ आप स्वीकार करत भये अब दूसरो प्रमाण देखावत हैं कौशिक जो विश्वामित्र ताड़का मारीचादिकरि अरु मुनितीय जो अहिल्यासो।पाप अरु शापकरि तथा जनकजू धनुषके नहीं टूटवेतें शोचरूपी अग्निकरि जलतरहे सो। केहसाधनतें सीतलभये यह नहीं समुझिपरत अर्थात् विश्वा- मित्र अयोध्यामो आनिकरि अपनो।दुखजनाये अहिल्या कहवे कों भी शक्ति न रही केवलदृष्टिके सन्मुख पड़ी तथा जनकजूते समा- गम भयो इतनेमात्र साधनकरि यह सबके दुखकों आप छोड़ाये तीसरो प्रमाण देखावतहैं केवट जो निषाद खग जोजटायु तथा शवरी सहजनाम स्वभावकरि चरण कमल विषें रतनाम तत्पर नहींरहे अर्थात् जो स्वाभाविक प्रीतिहै।तो तौ।आपके दरशनकों

पर्यंऊकरते सो आपजब कृपाकरि तिन्हके स्थानकोंगये तब सन्मुख तुम्हारे होते हेनाथ कुतनाम बबूरके वृक्षनहंश कांटारूप दुख-दाई सो सुन्दर फलनाम आम आदि उत्तम फलकों फलत भये अर्थात् जाके संगकरि अन्यजीव पापरूप होय सोई अब आपके सन्मुखता मात्र साधनकरि औरनिकों पवित्र करत है अपने यश करि अब चौथो प्रमाणदेतहैं भाई जो रावण अरु बालि ताकेबैर करि सुग्रीव अरु विभीषण गुरनाम बड़ो जो गलानि तेहिंगलत रहे सो कोड सेवातें हे रघुबर आप रीझिकरि भरतजू सदृशकिये अर्थात् सेवा पीछें किये पहिलेही यावत् कछू सेवा नहीं तबही भरतजू समान मिलिकरि आदर देतभये येत यह पूछो कि सब सेवक सरे ऐसोई हैं अथवा कोऊ लायकभो है तेहपर कहतहैं साहिबनाम निषाद जो आपताके अनुहरतनाम अनुहारिअर्थात् योग्य सेवक सो महावीर भये तौ ताको यह महिमा है कि जैसे रामनाम लिये तैसे ताहूको नामलिये सबजीवन्हको सुढरढरत नाम सोन्यो दांवपरत है अर्थात् आपकेसमान ऐश्वर्य जानिकरि जगत पूजन स्मरण करत है येतकहो कि सबतें श्रेष्ठ अरु कृपालु तुमहीं हो तौ अनेक जीव अनेक स्वामी कों क्यों सेवत हैं तेहपर कहत हैं कि श्रीरघुबर की रीति जाने व्यतिरेक पचिपचि नाम नाना साधनरूप क्लेश करि २ मरतहैं सो केवल मूर्खता सबप्रत्यक्ष प्रमाण सबतें प्रबलहै सो छलकों छोड़िकरि रामजू के शरण गये तुलसीहू ऐसे पापरूप जीव संसारतें तरत हैं ऐसो बिचारि श्री रघुबर शरण होनो जीवके सौभाग्य को अवधि है ॥ १३४ ॥

मू० । रामसनेहीसौंतैंनसनेह कियौ । अगमजोअमरनिहू सोतन
तोहिदियौ । दियौसुकुलजन्मशरीरसुन्दरहेतुजो फलचारि
को । जोपाइपण्डितपरमपदपावत पुरारि मुरारिको । यह
भरतखण्डसमीपसुरसरिथलभलोसङ्गति भली । तेरी कुमति
कायरकल्पबल्लीचहतिहैविषफलफली । अजहूंसमुझि चितदै
सुनौपरमारथ । हैहितुसोजगहूजाहितेंस्वारथ । स्वारथहि
प्रियस्वारथसोकातैकीनवेदबखानई । देखुखलअखिल परि
हरिसोप्रभुहिपहिचानई । पितुमातुगुरुस्वामीअपनपौ तिय
तनयसेवकसखा । प्रियलगतजाकेप्रेमसौंबिनुहेतुहितुतैंनहिंतैं
लखा । दूरिनसोहितूहेरहियेंहीहै । छलछांड़िसुमिरे

छोह कियेही है । किये छोह छाया कमलकर की भक्तपर भजतेहि भजै जगदीशजीवन जीवको जो साज सब सबको सजै। हरिहि हरिता बिधिहि बिधिता शिवहि शिवता जो दई । सोइ जानकीपति मधुर मूरति मोदमय मङ्गलमई । ठाकुर अतिहि बड़ो शील सरल सुठि । ध्यान अगम शिवहू भेट्यो केवट उठि । भरि अङ्क भेट्यो सजल नयन सनेह शिथिल शरीर सो । सुर सिद्ध मुनि कबि कहत कोउ न प्रेमप्रिय रघुबीर सो । खग सबरि निशिचर भालु कपि किये आपु ते बन्दित बड़े । तापर तिन्ह कि सेवा सुमिरि जिय जात जनु सकुचनि गड़े । स्वामी को सुभाउ कह्यौ सो जब उर आनिहैं । सोच सकल मिटिहैं राम भलो मन मानिहैं । भलो मानिहैं रघुनाथ जोरि जो हाथ माथो नाइहैं । ततकाल तुलसीदास जीवन जन्म को फल पाइहैं । जपि नाम करहिं प्रणाम कहि गुणग्राम रामहि धरि हिये । बिचरहिं अवनि अवनीश चरणसरोज मन मधुकर किये ॥ १३५ ॥

टी० । राम ऐसे स्नेही तिनतें स्नेह नहीं कियो तो बड़ी हानि है सनेही करबे को हेतु कहत हैं कि देवतन्ह को जो दुर्लभ सो शरीर तोको दियो अर्थात् मनुष्यशरीर भगवतस्वरूप प्राप्ति को अधिकारी सो तोको अति कृपा करि देत भये तेहू स्वामी तें बिमुख होनो न चाहिये जो शरीर अर्थ धर्म काम मोक्ष चारों को हेतु है अरु जाको पाय करि पण्डित जो बिवेकी सो परमपद शिव विष्णु के स्वरूप पावत हैं अर्थात् शिव उपासक शिव के स्वरूप को विष्णु उपासक विष्णु शरीर को प्राप्त होत हैं ऐसो तोहि दुर्लभ शरीर मिल्यौ तथा यहां भरतखण्ड कर्मभूमि जहां को कियो कर्म सर्वत्र भोग होत है ता ऊपर निकट जो गङ्गाजी मिलीं तौ घलमखोना म स्थान भरतखण्ड ऐसो उत्तम अरु सङ्गति गङ्गाजी की अर्थात् साधनकर्त्ता मनुष्यशरीर यथा स्थान अति उत्तम अरु सङ्ग तथकृत भलो तबहूं तेरी जो दुर्बुद्धि सो कायर नाम रे कादर अर्थात् कल्याण साधनतें बिमुख कल्पवल्ली नाम कल्पवृक्ष की लता तुल्य जो शरीर सङ्गति स्थान सो विष को फल फलबे को चाहत है अर्थात् यहि विषय अमृतसदृश मधुर मोक्षरूप फल लगनो चाहिये तांहि विषय विषतुल्य संसार को जन्ममरणरूप फल लग्यौ चाहत है यह बड़ी हानि है चेत कहौ कि जन्म तौ व्यर्थ व्यतीत भयो अब कहा करें तेहि पर कहत हैं कि अजहूं नाम जेतनी आयुर्बल रहिगई है तेतनी करि

चितहै समुझिकरि परमार्थकी वार्त्ता सुनोसो वार्ता कहतहैं हे हितु सो नामपरलोकको हितसोहै अरु जगकी नाम जगतके विषय भी जेहिके कटाक्षतें स्वारथ नाम ऐश्वर्यादि को प्राप्ति होति है सो रामजू हैं चेतक्यों है कि इनको परलोक प्रिय नहीं तौजौ स्वारथै प्रियहै तौसो स्वारथ कातैं नाम केहतैं मिलैगो कवन कौं उदारता तौ वेदबखान करतहै अर्थात् स्वार्थरूप जो नानाभोग सोऊ रामजीके कटाक्षव्यतिरेक नहीं मिलत देखुनाम विचारकरु रेखल अहि खलनाम सांप ते तू खेले है अर्थात् सांपते खेलो है ताको समय पाय सो सांप अवश्यकाटैगोतैसे सांपरूप जोसंसारसम्बन्धी नानाविषय सोतो कौ काटिदेगो अर्थात् सांपके काटेतें मृत्युहोत है तैसे दुर्लभजो मनुष्य शरीर सो व्यर्थनष्टह्वै जायगो ऐसो बूझि तेहखेलकौं छोड़िकरि सोप्रभुजो श्रीरघुबर ताकौं पहिचानु जेहतें पितादि जो सम्बन्धी अपनपौ नाम अपनौ जो हृदय सो प्रिय लगत है ताके प्रेमकरि अर्थात् चैतन्य सत्त परमेश्वर को अंस है तेहिकरि सब विषैं प्रियता भई है सोस्वामी बिनु हेतु नाम पूजा सेवारहित हितकारी हैं ताकौ तूनहिं लखानाम नहीं पहिचानतयहबड़ी मूर्खता है चेतपूछै कि सो स्वामी कहां है सो कहत हैं कि सो हितु दूरि नहीहै हेरुनाम विचार दृष्टितें देखुतब हियेही है नाम हृदयमो बिद्यमानहै अर्थात् चैतन्यरूप जीव जो तैं ताको प्रेमक अन्तर्य्यामी रूपकरिटिको है चेतकहो हृदयमो तौकृपाको हेनहींकरतेतेह परकहतहैं किजजो विषय कामनाताकों त्याग करि जो स्मरण करै तौ छोह कियेही नाम कृपा कियेही नाम कृपाको स्वरूपजनावत हैं छोहकरि हस्तकमल की छाया भक्तके ऊपर किये रहतहैं भजतहिनाम जो भजन करत है ताकौ सोऊ स्वामी भजै नाम भजन करत हैं अर्थात् अपनो करिलेत हैं तेह स्वामीको अब ऐश्वर्य जनावत हैं जगत कोईश्वर तथा जेतने जीव ताकेजीवनरूप सबकेनाम ब्रह्माआदि कीटपर्यंतके सबप्राणनामयथा योग्य ऐश्वर्य अरु अधिकारकों सजैनाम सजत हैं हरिहरितानाम ब्रह्मारुद्रको पालन शक्ति ब्रह्माकों बिधातानाम उत्पत्ति शक्तिशिवको शिवतानाम संहार शक्ति जेहने दई है ताकों दिखावत हैं सोई जानकी पति मधुर मूरतिनाम राजकुमार स्वरूपमो दमय नाम आनन्दमूर्ति मङ्गलमई नाम उत्सव स्वरूप इहां यह सन्देहहोतहै

कि विष्णु केभी ऐश्वर्यकेदाता श्री रामजू कोंकहैंतो विष्णुतैं भिन्न होतहैं ताकों यह समाधानहै कि ब्रह्मांड २ प्रति एक २ ब्रह्मा रुद्र अरु गुणावतार विष्णु रहत हैं तेह सबके कारण महाविष्णु श्रीमन्नारायण हैं सो महाविष्णु श्रीरामरूप भयेहैं यह हेतुकरि ब्रह्मांड २ प्रति जो गुणावतार विष्णु तेहके कारण श्रीरघुबरको कहतहैं याको प्रमाण जो देख्यौचाहै सो सत्सङ्गविलास विषैंदेखै अत्यन्तदुर्लभ होकरि सुलभहोनो यह महान गुणहै सो कहतहैं कि ठाकुर अतिही बड़ोनाम ब्रह्मादिके स्वामी परशील सुठिनाम अत्यन्तसरलनाम कोमल काहे कि शिवादिकके ध्यानकरि अगम नामकठिन अर्थात्जेहके स्वरूपके हृदयमो लैआवनेके हेतुसतासी हजार बरिसकी एकसमाधि शिवजू कों लगी ऐसी तो दुर्लभता कि सोई केवट तैं उठिकरि भेंट्यो नाम मिलतभये यह सुलभता की अवधिहै तेहकेवटते मिलते जलयुक्त नेत्र जेहतें शिथिल शरीर भयो सो देखि करि देवादि सब कहत भये कि प्रेमप्रिय रघुबर समान कोऊ नहीं है अर्थात् भगवान् के अवतारऊ अनेक हैं पर प्रमतें बसहोनो यह अधिकता श्रीरघुबरमोहै अन्यमो नहीं तेह प्रेम परबसताको देखावत हैं कि जटायू शबरी बिभीषण असंख्य भालु बानर तेह सबकौं अपनेतें अधिकबंदनीय जगतविषै करत भये अर्थात् पहिले महावीरादिको स्मरण पूजनादि भक्तसब करत हैं इतनी बड़ाईदियेहू ताहूपर तिनकी सेवाको स्मरणकरि जिय विषै जैसें सकुच निगड़े नामनमित भयेजात हैं अर्थात् ऐसीसेवा यह सब मेरीकिये हम कछू प्रतिउपकार न करिसके यहसंकोच है जेह रघुबरको जीवप्रति कहतहैं कि स्वामीको स्वभाव जो पूर्व कह्यौसो जबतू अपने हृदयमो लैआवैगो तब सकलशोच मिटिजा-यगो अरु रामजू आपहैं मनमो भलोमानिहैं रेजीवतोकोंश्र श्रिका परिश्रमऊं करनो नहींहै छायजोरि माथकों जोतू नमित करैगो अर्थात् निश्छल होकर प्रणाम मात्रकिये तें तत्काल नाम याही जन्मविषैं तुलसीदास कहतहैं कि जीवन जो आयुर्बल अरु मनुष्य को जो जन्म ताको फलपाइहै नाम सुफलहोयगोयहं पूर्वोक्त को बिचारकरि जिह्वातें नाम अरु गुणसमूह कऊमस्तकतें प्रणामकरु हृदयमो स्वरूप धारणकरु यहीरीति करि अवनि जो पृथ्वी तामो बिचरहि नाम सुख पूर्वक फिरो पर अवनीश जो महाराज श्री

रामजू ताके चरणकमलविषे अपने मनको भ्रमर करिकै तौ जीव-
नमुक्ति है यह अर्थ है १३५ ॥

मू०। जिवजबतेंहरितेंबिलगान्यो। तबतेंदेहगेहनिजजान्यौ। माया
बसस्वरूपबिसरायो। तेहिभ्रमतेंदारुणदुखपायो। पायो जो
दारुणदुसहदुख सुखलेससपनेहुं नहिंमिल्यो। भव सूलसोक
अनेकजेहितेहिपंथ तू हठिहठिचल्यौ। बहुयोनि जन्म जरा
बिपतिमतिमन्दहरिजान्योनहीं। श्रीरामबिनबिश्रामसूढ़
बिचारलखिपायौकहीं। आनंदसिंधुमध्यतनबासा। बिनुजाने
कतुमरसिपियासा। मृगभ्रमबारिसत्यजियजानी। तहंतू
मगनभयोसुखमानी। तहंमगनमज्जसिपानकरि त्रयकाल
जलनाहींजहां। निजसहजअनुभवरूपतूखलभूलिअबआयो
तहां। निर्मलनिरञ्जननिर्बिकारउदारसुखतें परिहस्यो।
निष्काजराजबिहायनृपइवस्वप्नकारागृहपस्यो। तैंनिजकर्म
डोरिदृढ़कीन्ही। अपनेकरनिगांठिगहिदीन्ही। तातेपरबस
पस्यो अभागे। ताफलगर्भबासदुखआगे। आगेअनेकसमूह
संसतउदरगतजान्यौसोऊ। सिरहेठऊपरचरणसंकटबात
नहिंपूछैकोऊ। शोणितपुरीषजेमूत्रमलकृमिकर्दमाबृत
सोवही। कोमलशरीरगम्भीरबेदनशीशधुनिधुनि रोवही।
तूनिजकर्मजालजहंघेरो। श्रीहरिसंगतज्यौनहिंतेरो। बहु
विधिप्रतिपालनप्रभुकीन्हों। परमकृपालज्ञानतोहिदीन्हों।
तोहिदियेज्ञानबिबेकजन्मअनेककीतबसुधिभई। तेहिईश
कीहौंशरणजाकीबिषममाया गुणमई। जेहिकिये जीवनि-
कायबसरसहीनदिनदिनअतिनई। सोकरेबेगिसंभारश्री-
पतिबिपतिमहंजिन मतिमई। पुनिबहुबिधिगलानि जिय
मानी। अबजगजायभजौंचक्रपानी। ऐसहिं करिबिचार
चुपसाधी। प्रसवपवनप्रेरेउअपराधी। प्रेस्योजेपरमप्रचण्ड
मारुतकष्ट नानातेसह्यौ। सोज्ञानध्यानबिरागअनुभवजात-
नापावकदह्यौ। अतिखेदव्याकुलअल्पबलछिणएक बोलि न
आवई। तवतीव्रकष्टनजानकोउसबलोगहर्षितगावई। बाल
दसाजेतेदुखपाये। अतिअसीमनहिंजाइंगनाये। छुधाव्याधि
बाधाभइभारी। बेदननहिंजानैमहतारी। जननीनजानेपीर
सो केहिहेतुशिशुरोदनकरै। सोइ करै बिबिधि उपायजातें

अधिकतुवछातीजरै। कौमारसैसवअरुकिसोरअपारअघको
कहिसकै। बितरेकतेहिनिर्दयमहाखलआनकाहुकोसहि
सकै।यौवनयुवतिसंगरंगरात्यौ।तबतूमहामोहमदमात्यौ।
तातेंत्यागिधर्ममर्य्यादा। बिसरेतबसबप्रथमबिषादा। बिसरै
बिषादनिकायसंकटसमुझिनहिंफाटतहियो। फिरि गर्भ गत
आवर्तसंसृतचक्रजेहिसोइहोइकियो। कृमिभस्मबिट परिणाम
तनतेहिलागिजगबैरीभयो। परदारपरधनद्रोहपरसंसार बाढ़
नितनयो। देखतहीआईबिरुधाई। जौतेंसपनेहुंनाहिंबुलाई।
ताकेगुणकछुकहेनजाहीं।सोअबप्रगटदेखुजगमाहीं। सोप्रगट
तनजर्जरजराबसब्याधिसूलसतावई। सिरकम्पइन्द्रीशक्तिप्रति
हतबचनकाहुनभावई। गृहपालहूंतेअतिनिरादरखानपान न
पावई।ऐसहुदसाबैराग्यनहितृष्णातरंगबढ़ावई। कहिकोसकै
महाभवतेरे। जन्मएककेकछुकगनेरे। खानिचारिसन्तातअव-
गाहीं। अजहुनकरुबिचारमनमाहीं। अजहुंबिचारुबिकार
तजिभजुरामजनसुखदायकम्। भवसिंधु दुस्तरजलरथंभजुचक्र-
धरसुरनायकम्। बिनुहेतुकरुणाकरउदारअपारमायातारणं।
कैवल्यपतिजगपतिरमापतिप्राणपतिहितकारणं। रघुपतिभक्ति
सुलभसुखकारी। सोत्रयतापशोकभयहारी। बिनुसतसंगभक्ति
नहिंहोई। तेतबमिलैंद्रवैजबसोई। जबद्रवैदीनदयाल राघव
साधुसंगति पाइयौ। जेहदरसपरससमागमादिक पापरासि-
नसाइयै। जिन्हकेमिलेदुखसुखसमानअमानतादिकगुणभये।
मदमोहलोभबिषादक्रोधसुबोधतेसहजहिगये। सेवतसाधु द्वैत
भयभागे। श्रीरघुबीरचरणलयलागे। देहजनितबिकारसब
त्यागे। तबफिरिनिजस्वरूपअनुरागे। अनुरागसोनिजरूप जो
जगतेंबिलक्षणदेखिये। सन्तोषसमशीतलसदादमदेहवन्तनले-
खिये। निरमलनिरामयएकरसतेहिहर्षशोकनब्यापई। लयलो
कपावनसोसदाजाकीदसाऐसीभई। जोतेहिपंथचलैमनलाई।
तौहरिकाहेनहोहिंसहाई। जोमारगश्रुतिसाधुदेखावै। तेहि
पदचलतसबैसुखपावै। पावहिंसदासुखहरिकृपा संसार आशा
तजिरहै। सपनेहुंनहींदुखद्वैतदरसनबातकोटिककोकहै। द्विज
देवगुरुहरिसन्तबिनुसंसारपारनपावई। यहजानितुलसीदास
त्रासहरणरमापतिगावई॥ १३६॥

टी०। अब जीवकों जेहि प्रकार तें संसार बन्धन भयौ है सो दे-खावत हैं यह जीव जबतें भगवान तें बिलग भयौ अर्थात् भगवान के स्वरूपमें यावत् प्राप्त रह्यौ तावत् भगवान तें भिन्न करि जीव ऐसा नाम न रह्यौ जब अविद्याके आवरणकरि पृथक्भयौ तबजीव नामभयौ तबतें देहको अपनो गेह जान्यौ तेह देह विषैं अभिनिवेस करि मायाके बसह्वै अपनो स्वरूप जो सतचित आनन्द सो बिस्मरण कियो तेहभ्रमतें दारुण दुख जन्म मरण रूप पावत है जेहस्वरूप कै भूले ते सुख को लेश स्वप्नऊ मे नहीं मिल्यौ तथा संसार सम्बन्धी शूलनाम गर्भ बास करि नाना दुख अरु शोक नाम स्त्री पुत्रादि के नाशभये लोयजौने मार्गमे चलेतें मिलतहै ताहीमें हठकरि २ चलै है ताकोफल बहुत योनिविषै जन्म अरु वृद्धत्व की विपत्ति भोगकरत है यहमतिमन्द हरिकौं नहीं जान्यो अब जीवतें पूछतहैं कि रेमूढ़ श्रीराम बिना विचारकरि देखु तो कहींतैने सुखपायो आनन्द समुद्र के मध्यमे तेरो निवासहै तू बिनुजाने क्यों पियासतें मरतहै अर्थात् आनन्द को समुद्ररूप परमेश्वर तेहते तू भिन्न नहींहै केवल अज्ञान करि क्यौंदुखभोगकरतहै तेह दुखभोगकरबेमे हेतुदेतहैं मृगतृष्णा कै जलरूप जोइन्द्रिन्हके विषै ताहीकोसत्यजानिकर सुखमानिवाले मगन भया अर्थात्सत्यआनन्दके स्वरूपको भूलकरि मृगतृष्णाके जल कों सत्यमानतहै यह मूढ़ताकी अवधि है तेह विषैंरूपमृगतृष्णा के जलविषैंमग्न होकरि स्नान पानकरैहै इहां विषयको ध्यानकरनोसोई स्नानहै तेह विषयकी प्राप्तिकरि जोसुख सोई पीवनातुल्य जहां तीनों कालमेजलनहीं अर्थात् सुखनहींअपनोसहज अनुभवरूप भूलिकरि देखलतू अब तहां आयौ अर्थात् सत्चित आनन्दस्वरूप अपना विस्म-रणकरि देहरूप अपनेकों मानतभयोसोतेरोरूप कैसो हैनिर्मलनाम विषय बासना रहित निरंजन नाम अविद्यारूप माया रहित निर्बि-कारनाम शरीरके जो बिकार अस्तिजायते बर्द्धते विपरिणमते अप-क्षीयते नश्यति यहसबकरि रहितउदार सुखनाम जेहसुखके लेशऊ प्राप्तिभये फेरि दूसरो सुख नहीं जानिपरत सो तैं निष्काज नामव्यर्थ स्वरूपानन्द रूपराज छोड़िकरि राजा की नाईं स्वप्न में कारागृह नामबन्दीखानामे परौ अर्थात् शरीराभिमान होतभयो तेहबन्धन को देखावतहै तू अपने अनेकजन्मकोंकियो जोकर्म ताहीकोदृढ़डोरी करत भयो अपने हाथन्ह ते नाम अज्ञान तें तेह डोरीको ग्रहणकरि

गांठि देतभयो इहां अहंकर्त्ताजोबुद्धिमाईं ग्रह पकरनो अरुयह कर्मतें
यहफल भोगकरेंगे यह जोवासना सोईगांठि सहसतेइतें हेअभागे तैं
परवस परयौनाम संसाररूप बन्धनभयोजो बांधौजात हैताकोदुखहोत
है सो तेह बन्धनको फल गर्भवासरूप दुख आगे होयगो रक्तआदि
जो मल अरु नाना प्रकार के कीड़ा सोई कर्दम नाम कान्दो तेहतें
आवृतनाम लपटिकरि सोवत है सो माता को भोजन कियो अनेक
जो कटु बस्तु वाही करि बेदन नाम पीड़ा यह रीति गर्भके क्लेश को
देखाये अन्य शब्द स्पष्टहैं तहऊं भगवत कृपालुता देखावत हैं तेह
गर्भमो तोकों ज्ञान विवेकदिये तब अनेकौ जन्मकी सुधि आई तेहतें
ऐसी बुद्धि उत्पन्न भई कि तेह परमेश्वरके हम शरण हैं जाकी यह
विषम मायागुण मईनाम त्रिगुणारूपा जानेजीव समूहको अपने बस
करि दिन२ प्रति रस हीन नाम सुखहीन करतोहै आप सर्वदा अति
नई नाम प्रबलहै जेहकी ऐसीमाया अरुऐसी विपत्तिमो जेहनेमति
दईहैसो श्रीपति शीघ्रसंभारोनामयहक्लेशतेत्राणकरौ पूर्वगर्भके दुख
को कहिकरि अबजन्मके क्लेशकों दिखावतहैं प्रसवनाम उत्पत्तिकाल
को जो बायु सो प्रेरणा करतभयो दुखदाई यह हेतु अपराधी कह्यौ
तेह जन्म कालको जो नानाकष्ट सो सहतभयो तेहके बेगतें गर्भमो
भयो जो ज्ञान अरु भगवत ध्यान संसारतें वैराग्य अपने स्वरूप को
अनुभव सो जातनानाम जन्म कालको दुखरूप जो अग्नि तामो जलि
गया अगिलौ दौतुक करि जन्म कालके दुखकों देखावत हैं अब बाल्य
अवस्थाके दुखको जनावतहैं अति अनीशनाम असमर्थ अर्थात् अत्यन्त
पौरुषहीन अवस्थाबिबिधि उपायनाम सुखकेवास्ते जलतेहतें अधिक
दुख यह प्रकार से सब नाम पांच वर्ष पर्यन्त बाल्यअवस्थाके दुखकों
भोगकरि दसवर्ष पर्यन्त कुमारअवस्था तेह.के ऊपर षोड़शवर्ष पर्यन्त
किशोर तेहदोऊ अवस्थाविषे अतिचंचल बिचार हीनताकरि अनन्त
पापजातू करतभयो सो कोकहिसकेहै युवाअवस्थाको अधमता वर्णन
करतहैं जीवतें कहतहैं कि गर्भविषे जबज्ञानभयो तब अनेक जन्मको
संकट जो स्मरणभयो रह्यौ सो बिसरयौ रे मूर्ख अरुसो समुझिकरिकै
तेरो हृदयनहीं फाटतहै फेरि गर्भविषे प्राप्त अरु जन्म ताकों आवर्त
नाम घूमनो अर्थात् गर्भ बासहोनो जन्म होनो मरणहोनो फेरि सोई
संसृतिचक्र नाम संसार रूप चरख है नाम जो चरख पर चढ़े है सो
बारबार नीचे ऊपर जायहै आवै है तैसे जेह नाम जेह कर्तव्यतातें

जन्ममरण होत है सो। ईसोई फेरकारनलाग्यौ तौनकर्तव्यता देखावत हैं कृमि नाम शरीर सड़िगयौ तौ कीड़ा ह्वैगये भस्मनाम पुत्रादि सानुकूल रहे बड़ी क्रिया किये जलायदिये तो राख ह्वै गई विटनाम श्रृगाल कुत्ता गिद्ध खायलिये तो विष्टा भयौ परिनाम अन्तसोयहीतीनों गति हैं जेह शरीर की तेहके अर्थ समस्त जगतकों बैरीभयौ बैरी है। बैसो हेतु कहत हैं परस्त्री पर द्रव्य अरु पर जीवन्ह तें द्रोह सोई संसार रूप नित्यनयौ बढ़तभयौ यह प्रकारतें युवाअवस्था अरु युवाके ऊपरको जो वयःक्रम यावत् पौरुष रह्यौ सो समाप्त भयौ अब वृद्ध अवस्थाको देखावत हैं जरजर नाम जीर्ण प्रतिहत नाम नष्ट गृहपालनाम कूकर ऐसक दसा विषय वैराग्य नहीं तृष्णारूप तरंग बढ़ावै है अर्थात् नाना मनोरथ गृह सम्बन्धीकरे है यह जो महा संसार है तैरसो को कहि सकै है काहेकि एक जन्मके क्लेशकों पूर्व गिनाये सोऊ कछुक ताहूमो मनुष्य योनि को व्यवस्था कहे ऐसेही चारि खानिनाम अण्डज पक्षी योनि उद्भिज वृक्षजाति स्वेदज अरु ऊष्मज ढील कीटादि चतुर्थ जरायुज जो गर्भकरि उत्पन्न होतहैं मनुष्य अरु पशु यामो सततनाम निरन्तर अवगाहो नाम जन्मग्रहणकरि तौने तौने योनि के पीड़ाकों भोगकिये अजहूं अपने मनमो विचार न करे है विचार करि कहाकरनो सो शिक्षाकरत हैं विकार तजि नाम विषय बासना त्यागकरि रामजू को भज कैसे हैं श्री रघुबर संसाररूपी समुद्र दुस्तर जो दुर्लभ ताके पार करबे कौ जलरथ नाम जहाजरूप चक्रधर नाम दुष्टन्ह के निमित्त चक्र सुदर्शन को धारण किये बिनु हेतु नाम जीवतें कछू सेवा पूजाकरायबे को प्रयोजननहीं केवल सन्मुख भयेतें कृपाके करनेवाले गतकारण नाम जाको दूसरो कारण नहीं सबके कारण आपई अन्यत शब्दस्पष्ट है पूर्व रामजूको भजन करनो कह्यौ सो भजन कहतहैं भगवत भक्तिश्रवण कीर्तनादि सोई भजन सुलभ नाम जैसे तपस्या योगादिमों क्लेश होतहै सोभक्तिमो नहीं सो भक्ति सतसंग व्यतिरेकनहीं होति अरु तौन साधजेहके संगकरि भक्ति होति है सोई नाम परमेश्वर जब कृपाकरें तब मिलें अर्थात् परमेश्वर कृपाकरेंतो साधुमिलैं तबबड़े भाग्यकरि सतसंगहोवेतेहि सतसंगकरि भक्ति महारानी की प्रीति तेह भक्ति तें परमेश्वर मिलतहैं यह क्रमहैजेह साधुकेमिले भक्तिहोतिहै ताको प्रभावकहत हैं जिनके मिले तें दुखसुखमो सम बुद्धि होतहै काहूतें अपनो मान